# च तु र्थ अध्याय

## जैनेंद्रके उपन्यासोंके पति पात्र.

# चतुर्थ अध्याय

## जैनेंद्रके उपन्यासोंके पति पात्र :

जीवनके मूलभूत तथ्योंका उद्घाटन करनेके लिए जैनेंद्रजीने अपने उपन्यासोंके पात्रोंकी सृष्टि की है. गहरी अनुभूतिसे निष्पन्न उनके पात्र अपने असामान्य कार्यव्यापारोंव्दारा असाधारण जीवन-दर्शन अभिव्यक्त करते हैं. जैनेंद्र विवाह संस्थाको अधिक महत्व देते हैं. समाजकी व्यवस्थाके लिए विवाहकी आवश्यकतापर उन्होंने अधिक ध्यान दिया है. जैनेंद्रके पात्र बाहरी जगतकी अपेक्षा भीतरी जगतमें, अचेतनमें अधिक रहते हैं. अन्योंके प्रति इन पात्रोंका दृष्टिकोण अलग है. जैनेंद्रके उपन्यासोंके पुरुष पात्रोंमें, पति पात्र अधिक असाधारण से लगते हैं. शायद इसका कारण बेमेल विवाह रहा होगा. अपनी ओरसे ये पात्र अपनी पत्नियोंको अधिक सुख-सुविधाएँ प्रदान करते हैं, जिनका लाभ उनकी स्त्रियाँ उठाती हैं. पत्नियोंकी विवेक बुध्दि और यौन प्रवृत्तियोंमें व्दंव्द दिखायी देता है. पति इजाजत देते थे. " पर वे प्रेमी को भी तो समर्पित नहीं हो पाती थी, कदाचित् इसलिए कि उनकी विवेक बुध्दि उन्हें पतिके प्रति विश्वासघात करके उन्हें अपनीही नजरोंमें गिरने नहीं देती थी. यद्यपि लंबे मानसिक संघर्षमें उनकी विवेक-बुध्दि ही प्रबल रहती है, तो भी अंततोगत्वा उनकी यौन प्रवृत्ति उनकी इस विवेक-बुध्दिपर विजय पा जाती है." [१]

जैनेंद्रके उपन्यासोंके पति-पात्रोंकी स्त्रियाँ पर्देमें नहीं रहती समाजमें सामाजिक बनकर कुछ करना चाहती हैं. पतियोंपर भी अधिकार जमाती हैं. प्रसंगवश पतिको स्त्रीके विचारोंको मानना पडता है. धनकी उन्हें कमी न होनेके कारण औरोंके साथ वे उदारतासे व्यवहार करते हैं. उनमें कापुरुषता आयी है. वे अपनी पत्नियोंको दूसरे पुरुषकी ओर धकेलनेमें भी हिचकिचाते नहीं.

---

१. हिंदी उपन्यासमें चरित्र चित्रणका विकास-रणवीर रांग्रा संस्करण १९६१ पृ. ३६४

संक्षिपमें कहा जाय तो जैनेंद्रजीने पति-पात्रोंका निर्माण करते समय उदारवादी दृष्टिकोण अपनाया है. आदर्शकी अपेक्षा यहां भौतिकवाद और यथार्थ प्रधान रहा है. व्यावहारी जगतमें रहते हुये ये पात्र धर्म, समाज, राजनीतिके बारेमें खुले विचार व्यक्त करते हैं. मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे इनकी ओर देखा जाय तो इनमें काम अभुक्ति, उदार प्रकृतिवाद समाया है. इन विशेषताओंसे बढकर आदर्शवादी सामान्य , आदर्शोन्मुख यथार्थवादी, यथार्थवादी पति पात्रोंकी निर्मिती जैनेंद्रने की है. जैनेंद्रके उपन्यासोंमें निम्नांकित पति-पात्र आये हैं.

| | उपन्यासका नाम | पति पात्र |
|---|---|---|
| १. | " परख " | १. सत्यधन २. बिहारी |
| २. | " सुनीता " | १. श्रीकांत |
| ३. | " त्यागपत्र " | १. प्रमोद २. प्रमोदके फूफा ३. कोयलेवाला. |
| ४. | " " कल्याणी" | १. वकील २. डा. असरानी |
| ५. | " सुखदा " | १. कांतस्वामी |
| ६. | " विवर्त " | १. बैरिस्टर नरेशचंद्र |
| ७. | " व्यतीत " | १. जयंत २. संपादक महोदय ३. मि.पुरी ४. कुमार |
| ८. | " जयवर्धन " | १. जयवर्धन २. मि.नाथ |
| ९. | " मुक्तिबोध " | १. सहायबाबू २. कुंवरसाहब ३. नरबाबू |
| १०. | " अनंतर " | १- प्रसाद २. आदित्य, ३. प्रकाश |
| ११. | " अनामस्वामी " | १. शंकरउपाध्याय २. राजकुमार ३. उदिताके पति |

उपर्युक्त पति-पात्रोंका और उनकी चारित्रिक विशेषताओंका स्पष्टीकरण हमने इस अध्यायमें किया है. पत्नियोंके संदर्भमें इन पात्रोंका मूल्यांकन करते समय इन पात्रोंके यौन जीवनके संदर्भमें जो उलझानें और कुंठायें आयी हैं, उनका भी विवेचन किया है. जैनेंद्रने अपने उपन्यासोंमें अनाम पात्रोंकी निर्मिती की है. कुछ पति पात्रोंके नाम नहीं मिलते. अत: उनका उल्लेख पेशेसे ( जैसे वकील) पात्रका नाम निर्धारित करते समय इस प्रकारकी आयोजना करनी पडी है, वहां पत्नी पात्रोंके प्रति भी सतर्कता जतानी पडी है. क्योंकि अनेक पतियोंके पत्नियोंके नाम उपन्यासोंमें अप्राप्य हैं.

पति पात्रोंका मूल्यांकन करते समय उपन्यासोंके प्रमुख पति-पात्रोंकी जानकारी दी है. इसमें विधुर पति पात्रे, तलाक दिये हुये पति-पात्र आदि पति-पात्रोंका समावेश हुआ है. ऊपरनिर्दिष्ट पति पात्रोंका मूल्यांकन निम्नांकित है.

### " परख " उपन्यासके पति-पात्र :

#### १. सत्यधन :

माधुर्य, आस्वादन और आदर्शकी झोंकेमें पडा हुआ युवक सत्यधन है. आस्था, निष्ठा, निश्छल प्रेम और दूरदर्शिता/कारिताके अनुपम संकेत उसके चरित्रमें छिपे हुये हैं. सत्यधनने वकालत पास की है. टाल्स्टाय, रस्किन, गांधी, शेक्सपिअर आदि महानुभावोंके विचारोंके आदर्शोंको व्यवहारमें लानेके प्रयत्न वह करता है. गांवमें लंबी छुट्टियोंके समय वह आता है. पिताजी न रहनेसे मां ही एकमात्र आधार उसे है. पडोसकी बाल-विधवा लडकी " कट्टो" से वह निस्सीम प्यार करता है. लेकिन कट्टोके प्रति उसका प्रेम वैयक्तिक स्तरका प्लैटॉनिक भाव है. सादगी उसे प्रिय है. परिणामत: देहलीकी अपेक्षा देहातके प्रति उसे अधिक

आकर्षण है. " कट्टो " को उसका पढाना केवल नाममात्र है. क्योंकि इस पढाई का अत्याधिक लाभ कट्टो को नहीं होता. वह उसे मास्टरजी कहकर पुकारती है और गुस्से बढकर शिष्याके विचार आधुनिक एवं प्रगल्भ हैं. अपना काम निश्चित समयपर न करनेवाले वकीलसाहब होशियार बहादुर को वह सबक सिखाना चाहता है. लेकिन ईमानदारीके तैशमें आनेके कारण होशियार बहादुरसे उसे फटकार सुननी पडती है - " ओ हो ! तो आप ईमानदार वकील बनेंगे. तब तो म्युजियमके लायक होंगे आप. क्योंकि अभी तक ऐसा जानवर देखा नहीं गया." [१] आहत अहं के कारण वकीलीका व्यवसाय न करनेकी प्रतिज्ञा वह बार-रूममें करता है.

भगवतदयालके पुत्र बिहारीसे सत्यधनकी गाढी भिन्नता है. जिसतरह पडोसिन विधवा लडकीको उसने " कट्टो " नाम प्रदान किया है, वैसेही बिहारीकी बहन "गरिमा" को उसने "गरिमा" नाम दिया है. भगवतदयाल चाहते हैं कि सत्यधनका विवाह गरिमासे हो. बेकन जैसे लेखकोंकी दर्शन-शास्त्रकी पुस्तकें पढनेके कारण सत्यधन जीवनकी नश्वरताके विषयमें चिंतन करता है. कट्टोका उध्दार करना चाहता है. आदर्श नारी मिनलेतक वह विवाह करना नहीं चाहता. लेकिन उसकी व्यावहारिक सूझबूझ अधिक प्रखर है. " एक तरफ वह चाहता है कि कट्टोका जीवन आरामसे व्यतीत हो और दूसरी तरफ उसकी दृष्टि अपने व्यक्तिगत लाभपर टिकी हुयी है. इसके लिए बडी चतुराई के साथ अपने मित्र बिहारीकी सहायताकी अपेक्षा करता है." [२]

सत्यधन और कट्टोका प्रेम आत्मिक, आदर्श और निश्छल है. दोनोंका एक दूसरेपर पूरा-पूरा विश्वास है. अति घनिष्ठ संबंधोके कारण वह गरिमाकी ओर आकृष्ठ हुआ है. उससे विवाह करनेकी इच्छा उसमें तीव्र है. लेकिन गरिमाको वह फँसाना नहीं चाहता

१. परख जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८४ पृ.९
२. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन- डा. बलरामसिंह राणा प्रथम संस्करण १९६५ पृ. ९५४

विवाहकी जल्दी उसे नहीं है. बल्कि मां के अनुरोधपर गरिमासे विवाह करनेके लिए वह तैयार होता है. कट्टोका प्रश्न बिहारीके माध्यमसे छुडाकर सांत्वना पाता है.

गरिमा पढी-लिखी लडकी है. मन ही मन सत्यधनसे वह प्रेम करती है. सत्यधन कट्टोके विचारोंसे मुक्त नहीं हो पाता, वह उसे पानेके लिए अनवरत प्रयत्न करती है. जिसमें उसे पिता भगवत-दयाल की सहायता मिलती है." ......गरिमामें कट्टोके लिए ईर्ष्याका भाव है. सत्यधन कट्टोके प्रति आकर्षित है, यह सोचकर गरिमा ईर्ष्यासे जल उठती है और सत्यधनको फुर्तीसे पेडपर चढकर दिखाती है और कट्टोको तुच्छ करनेके लिए एक तकिया भी तैयार करती है. उसका उद्देश्य है " कट्टोको दुनियामें सब कुछ न मानने लगना." [१] मास्टरजीकी भोली-भाली कट्टोके सामने विचारोंकी दृष्टिसे गरिमाको पराजित होना पडता है. सत्यधानको पिताका प्रेम शायद कम ही मिला है. अतः भगवत दयालके प्रति पिताकी भावनासे वह देखता है.

गरिमा और कट्टोको लेकर सत्यधनके मनमे उलझन है. गरिमाके प्रति आकर्षण और कट्टोका उध्दार ये दोनों भावनाएँ उसके अंतरंगमें बसी हुयी है. अपना मार्ग सीधा बनानेके लिए वह बिहारीको कट्टोकी ओर धकेल देता है. देहातसे प्रेम होकर भी देहलीके सामाजिक जीवनका आकर्षण उसमें प्रखर है. मां, कट्टोकी मां आदि स्त्रियोंके प्रति उसके मनमें आत्मीयता, गहन श्रध्दा और अपूर्व प्रेम है. आदर्श विचारोंकी साक्षात मूर्ति, प्रकृतिका आकर्षण, प्रतिष्ठाका प्राप्ति आदि प्रवृत्तियाँ उसके व्यक्तित्वमे समायी हैं. पत्नी होनेपर भी गरिमाके प्रति सम्मानकी दृष्टिसे वह देखता है.

सत्यधन आदर्शोंके आडंबरोंमें रहता आया है. गरिमाकी अप्रसन्नता और ससुरकी बदलती आँख देखकर उसका चित्त विचलित हो

१- जैनेंद्रके उपन्यासोंका शिल्प - ओमप्रकाश शर्मा प्रथम संस्करण १९६५ पृ. ६३

जाता है. परिस्थितियोंको बदलनेका साहस उसमें नहीं है. - नियतिपर भरोसा रखकर आगे-आनेवाली घटनाओंको परिवर्तित करनेके लिए वह उद्यत नहीं होता. " सत्यधन अनुदार वृत्तिका, समाज-भीरु और आत्मप्रवंचक युवक है. ऐश्वर्य के प्रति प्रबल आग्रह और समाजकी परंपरागत रुढियोंको विच्छिन्न करनेकी शक्ति न होनेके कारण ही वह कट्टोको अस्वीकारकर गरिमाका पाणि-ग्रहण करता है." १ स्वार्थवृत्ति उसमें रहनेसे गांव छोडकर वह ससुरालमें रहनेके लिए जाता है. ससुर भगवतदयालके अनुरोधपर वकीली भी करने लगता है.

भगवतदयालकी मृत्युके बाद सत्यधनके जीवनमें परिवर्तन हुआ है. ससुरका घर छोडकर वह दूसरे स्थानपर रहता है. ससुरकी मृत्युके समय ससुरकी और उसकी भेंट नहीं होती. जीवनकी निराशयुक्त स्थितिमें कट्टो उसके पास आकर उसे सांत्वना देती है. बहुतसे रुपये उसे देकर चली जाती है. सत्यधन आत्मग्लानिका अनुभव करता है.

## २. बिहारी :

बहन गरिमाके जीवनको सुख पहुँचानेके लिए अपने जीवनकी, और यौवनकी आहुति देनेवाला निर्द्वंद्व व्यक्तित्व बिहारीका है. वह अनेक प्रश्नोंके प्रति हँसी-खुशीसे देखता है. बचपनसेही उसे आराम और पैसा मिला है. परिणामतः इन दोनोंके प्रति वह तुच्छतासे

---

१. हिंदी तथा मराठी उपन्यासोंका तुलनात्मक अध्ययन - शांतिस्वरूप गुप्त -संस्करण १९६५ पृ.२८५

देखता है. जिंदगीमें वह रोमांसको अधिक महत्व देता है. प्रत्येक उस जोखिमको, जिसमें चुनौती हो, उसे उठानेके लिए एवं उसका सामना करनेके लिए वह हरदम तैयार रहता है. जोखिमोंसे वह प्यार करता है. उन्हें ढूँढता है, और उन्हें सुलझानेकी कोशिश भी करता है. वह आत्मपीडाका शिकार है. उसने समझ लिया है कि प्रिय मित्र सत्यधनका मन कट्टोमें अटका हुआ है. बहन गरिमासे सत्यधन , विवाहके लिए तब तैयार होगा, जब कट्टो सत्यधनके मार्गसे अलग हो. कट्टोकी जोखिम उठानेके लिए एवं उसका वैधव्य हटानेके लिए बिहारी तैयार है. सीधी-भोली-चिकनी दुनियादारी और बनी-बनाई सडक उसे प्रिय नहीं है. घुमक्कडकी जिंदगी उसे पसंद है. पिताजी भगवत-दयाल उसके बारेमें अधिक नहीं सोचते. उसे उपने तरीकेसे बढने देते हैं. " पिता इसके संबंधमें चिंता नहीं करना चाहते. आदमीकी तरह दुनियामें बढकर वही खुद अपनी जीवन-संगिनी ढूँढ ले. उनका विश्वास है. बिहारी जैसे-तैसे एक ढंगके साथ दुनियामें अपनी राह तै कर जायेगा. उसके बारेमें ज्यादा परेशान क्र होनेसे काम न चलेगा. उसको कोई बहू ला दी जायेगी तो उससे उसकी कभी न निभेगी और खीझ-खीझकर वह अपनी जिंदगीको लुंज कर लेगा".१ सत्यधनके गांव जाकर कट्टोसे विवाह करके जब वह वापस आता है. तब भी पिताजी अपनी बहूके बारेमें अधिक चिंता व्यक्त नहीं करते. क्योंकि उन्होंने समझ लिया है कि बिहारी जो भी करेगा, वह अपने मनकी ही करेगा. वह कट्टोका आत्मिक पति बन गया है.

बिहारीका समूचा व्यक्तित्व आत्मविश्वाससे परिपूर्ण है, जीवनकी खुशियोंको बाहुबलसे प्राप्त करनेके लिए वह प्रयत्न करता है. सत्यधन और कट्टोके संबंधोंके बारेमें उसने बहुतसा सुना है. लेकिन

---

१. परख - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८४ पृ. २९

3667
A

गांवमें आकर कट्टोकी आत्माको पानेमें केवल बिहारी ही सफल हुआ है. मानवीय संवेदनाओंका वह सच्चा भोक्ता है. दो-चार दिनोंमेंही कट्टोकी सहृदयता उसने पा ली है. आदर्श कल्पनाओंकी ऊँची-पूरी उडान बिहारी और कट्टो इस युगलमें हम पाते हैं. बिहारी साहस और धैर्यपर दृढ विश्वास रखता है. प्रत्येक क्षणके प्रति व्यवहारकी दृष्टिसे देखता है. स्वच्छंद और साहसी वृत्ति उसके पास रहनेके कारण ही कट्टोके पतिके रूपमें सत्यधनने उसे चुना है. उसने कट्टोके उध्दार के लिए बिहारीकी सहमति पायी है. " पति हो जानेपर भी बिहारी, सत्यधनमें पत्नी कट्टोकी अगाध श्रध्दा देखकर आश्चर्यचकित रह जाता है. लेकिन सत्यधनके प्रति उसके व्यवहारमें वितृष्णाका भाव नहीं आता."[1] गरिमाका मार्ग सुलभ बनानेके लिए वह कट्टोको सत्यधनके मार्गसे अलग कर देता है. कट्टो सत्यधनके प्रति आकर्षित हुयी है, यह जानकर भी कट्टोका प्रेम और उसकी आत्मीय श्रध्दा बिहारीने पायी है.

बिहारी पढनेमें अधिक तेज नहीं है, परीक्षा पास होकर धनके लिए नौकरी करना उसके बसके बाहर है. गांवकी ओर जाते हुये उसके विचार द्रष्टव्य हैं. वह निरा देहाती बनकर जीना चाहता है. " .....भई, बडी अच्छी बात होगी. मैं गांवमें रहने लगूँगा एक झोपडी बनवा लूँगा. शहरमें रहना कुछ नहीं, - तमाम दुनियाकी आफत. उसे तो मैं. शहरी कभी नहीं बनाऊँगा....मुझे नहीं पसंद यह वकालत. मनहूसियत छा जाती है. जिंदगीका मजा कुछ रहताही नहीं, पैसा, अदालत, मुवक्किल ~~रहूँगा~~ और झूठ और फरेब, और ..... नहीं, बढिया किसान बनकर रहूँगा." [2] बंधनोंमें

---

1. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन
डा.बलराजसिंह राणा प्रथम संस्करण १९७८ पृ.१४६

2. परख जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८४ पृ. ५४-५५

बध्द होकर रहना बिहारी नहीं चाहता. गरिमा बहनका असीम प्यार बिहारीने पाया है. विपिन भाईके प्रति उसका स्नेह भी प्रशंसनीय है. कट्टोके प्रति उसकी दृष्टि अधिक स्नेहशील रही है.

कट्टो और बिहारी आजीवन वैधव्यका यज्ञ पूरा करनेकी प्रतिज्ञामें बंध जाते हैं. उन दोनोंका मिलन मनके स्तरपर है. यौनाकर्षण की भावना उनमें कम है. आदर्शकी कामना करती हुयी कट्टो आजीवन दिव्य-वैधव्यको वरण करती है. जिसमे बिहारी सहयोग देता है. " और एक आदर्शकी चरमसीमाको छूता हुआ अतीव कठिन यज्ञ संपन्न करनेके लिए वे दोनों प्रतिज्ञाबध्द हो गये. एक विचित्र वरण, जिसमें शहनाईकी ध्वनि नहीं, ढोलक तुमुल नहीं, सखियोंकी चहक नहीं, मित्रों-परिजनोंके कहकहे नहीं- बस दोनोंने जीवनके महत् आदर्शोंकी सहज स्वीकृति हेतु एक-दुसरेका हो जाना स्वीकार कर लिया."[२] बिहारीके पिताजी भगवतदयाल कट्टोसे मिलना चाहते हैं. मृत्यु शैय्यापर बिहारी पिताजीसे कट्टोकी भेंट करा देता है. उसकी पसंद देखकर पिताजी भी आनंदित होते हैं. और बहूसे शुश्रुषा करा लेते हैं.

सत्यधन और गरिमाके सुखके लिए बिहारी और कट्टो इन दोनोंने अपना जीवन अर्पित किया है. बिहारीका व्यक्तित्व उसके निर्मल हृदयका प्रतीक है. अबोल और मूक कट्टोसे वह बार-बार मजाक करता है. शहरी नव-युवक होनेपर भी सरल,सादा और देहाती जीवन बितानेकी अभिलाषा उसमें है. भौतिक जीवनसे निर्मित तडक-भडकको छोडकर आधुनिक जीवनमें भी शांत और सादगीसे जीवन जीनेकी कामना उसकी बनी

---

२. उपन्यासकार जैनेंद्र - मूल्यांकन और मूल्यांकन -
- डा.मनमोहन सहगल प्रथम संस्करण-१९७६ पृ.१०३

है. सत्यधनका विवाह हो जानेपर दो वर्षोंतक वह भारत-वर्षमें घूम रहा है. लेकिन उसका निश्चित पता ज्ञात नहीं हो पाता . पिताकी मृत्युके समय वह उनके पास रहता है; लेकिन पिताजी व्दारा दिये गये धन और मकानको वह स्वीकृत नहीं करता. दोनों पति-पत्नी - बिहारी और कट्टो अन्योंके लिए जीवन समर्पित करनेके लिए दुबारा एक दुसरेसे, अलग हो जाते हैं. सामाजिकोंका उध्दार बिहारीका अंतिम लक्ष्य है.

" सुनीता " उपन्यासका पति-पात्र

१. श्रीकांत :

संपन्न परिवारमें रहकर जिंदगीकी ओर निरासक्त एवं निरामय दृष्टिसे देखनेवाला व्यक्तित्व श्रीकांतका है. विद्यार्थी जीवनसेही उसका व्यवहार संयमित और नियमित रहा हैं. हँसी, मजाकमें भी वह कम भाग लेता है. पुष्ट देह, संपन्न परिस्थिति, सुंदर वर्ण और धार्मिक वृत्ति उसने अपने पास सँजोयी है. अध्ययनमें उसे रुचि है. परिणामत: अनिवार्य बी.ए.पास करनेके उपरांत एल्.एल्.बी. का इम्तिहान भी वह उत्तीर्ण हुआ है.

वकीली शुरु करनेपर दि. ५-६-१९३२ को श्रीकांतने सुनीतासे शादी की है.[१] पत्नी सुनीता पढी-लिखी है. वह अनिंद्य यौवना, प्रसन्नचित्त, हँसमुख और असामान्य परिवारकी रही है. वह घरमें होकर भी श्रीकांत हमेशा गुम-सुम रहता है. क्योंकि उसे हरिप्रसन्नकी याद सताती है. हरिप्रसन्न श्रीकांतका सहपाठी है, जिसने श्रीकांतपर अमिट प्रभाव छोडा है. श्रीकांत हर दृष्टिसे संपन्न रहा है. इतना सब होकर भी उसके जीवनमें

---

१. सुनीता - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८० पृ. ४४

नीरसता, आलस्य, अनाकर्षण और जडता छायी है. बहुतसे क्षण ऐसे आ जाते है; जब श्रीकांत और सुनीता दोनों एक दूसरेके सामने रहकर भी मौन, चुप रहते हैं. उसका दम घुटकर, तबियत ऊबने लगती है. आनंद विरहित वातावरणमें उसे हरिप्रसन्न की याद सताती है. " अब ? अब वह कहाँ है ? कैसा ? मैं तो घर-गिरस्तीकके बीचमें हूँ, और किनारेसे आगे बढकर वकालतके भी बीचमें हो रहा हूँ. चारों ओरसे सुरक्षित, उपस्नेव्य, वह अभागा भटकते रहनेके लिए अभी जिंदा है कि नहीं .....?"[१] हरिप्रसन्न को बुलानेके लिए वह एक पत्र भी भेजता है और साथमें सुनीताका फोटो भी. पता न मिलनेपर पत्र वापिस आता है; जिससे हरिप्रसन्नको पानेकी इच्छा श्रीकांतमे तीव्र हो जाती है.

सुंदरी, सुशीला सुनीताका साथ होकर भी जीवनमें श्रीकांत निराश है. वह कुंठाग्रस्त पात्र है. श्रीकांत हरिके साथ तादात्म्य प्रस्थापित कर सकता था. इसलिए अपनी पारिवारिक आपत्तिको हरिके सामने प्रस्तुत करता हुआ वह पत्रमें लिखता है कि- " मैं वकालत करता हूँ और वह बेचारी भी कुछ साथ देती रही है. लेकिन हम दोनोंका कुछ आंतरिक मेल नहीं. मैं उसे रिझा नहीं सकता दीखता."[२] श्रीकांत जीवनमें असंतुष्ट और दुःखी है. हरिप्रसन्नसे मिलनेकी कुंठा उसके मूलमें पैठी हुयी है. परिणामतः सुनीताके साथ त्रिवेणी संगमकी और वह हरि की खोज करता हुआ जाता है. लेकिन वहाँ हरिके केवल दर्शन होते हैं. उसे पानेमें वह असमर्थ होता है. देहलीमें जब उसे वह पाता है तब घरमें लाकर उसका सुनीतासे परिचय करा देता है. देवर-भाभीका उन दोनोंमें संबंध स्थापित

---

१. - सुनीता - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८० - पृ. १३

२. सुनीता - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८० - पृ. १६

करके उपना कर्तव्य पूरा करनेके लिए वह उद्यत हो जाता है.

श्रीकांत एक मनोवैज्ञानिक पहेली है. जैनेंद्रजीके अहिंसावादी दर्शनका प्रतिनिधी और प्रयोगकर्ता पात्र वह बना है. वैवाहिक जीवनमें सुख न रहनेसे निरानंद वातावरणको हटानेके लिए हरिप्रसन्नद्दारा नयी वायु अपने घरमें वह लाता हैं. " हरिप्रसन्न जो भी है और जो भी होता है, श्रीकांत को तो वही स्वीकार है, इसका एक कारण यह हो सकता है कि श्रीकांतमें हरिप्रसन्नके लिए समलैंगिक आकर्षण हो, जिसके फलस्वरूप वह सुनीताकी अपेक्षा अपने मित्रकी ओर अधिक आकृष्ठ होता है. उसकी प्राप्तिके बादही वह स्थानांतरीकरण प्रक्रियासे सुनाताकी ओर आकर्षित होता है."[१] हरिप्रसन्न घरमें आनेपर श्रीकांत सुनीताको अधिक स्वातंत्र्य देता है. हरिप्रसन्न के मनकी गांठ वह पाना चाहता है. हरि श्रीकांतको कोई रहस्य नहीं बताता, वह उसके लिए निरंतर दुर्बोध बनता है.

श्रीकांतमें यौन-विपर्यस्त भावनाओंका अस्तित्व है. अनिंद्य, सुंदरी सुशील, सुगृहिणी, सुशिक्षिता तथा प्रथम संतान पूर्व नव-परिणीत वैवाहिक जीवनमें श्रीकांतको रस नहीं है. व्यक्तिके मध्य रतिप्रेरणाके लिए एक पक्षकी आवश्यकता पडती है. जिसे आहत करकेही वे सक्रिय हो पाते हैं. श्रीकांतके चरित्रमें ऐसे अनेक क्षण आये हैं; जहांपर वह सुनीताको हरिप्रसन्नकी ओर मानो ढकेलसा देता है. रात्रिके समय सुनीता श्रीकांतके लिए दूध लाती है. तब वह दूधकी प्याली लेते हुये पूछता है - " और हरिप्रसन्न को दे दिया ? - पहले उसे देकर आओ."[२] श्रीकांतके लाहौरसे आये

---

१. हिंदीके मनोवैज्ञानिक उपन्यास - डा. धनराज मानधाने
- प्रथम संस्करण जनवरी १९७१ - पृ. १४१

२. सुनीता - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८० - पृ. १५३

हुये पत्रमें भी ऐसी ही बाते हमें मिलती है. यौन संबंधी तृतीय आहत-पक्ष यहाँ महत्वपूर्ण रहा है. जहां प्रेमी (श्रीकांत) और प्रेमिका (सुनिता) के बीच तीसरे व्यक्तिकी अत्यंत आवश्यकता रहती है." उसके प्रणयमें तत्परत्व तभी आता है, जब उसके और सुनीताके बीच हरिप्रसन्न आ जाता है. इस तत्परत्वको लानेके लिए वह स्वयं चेष्टापुर्वक हरिप्रसन्नको सुनीताके निकट ले आता ~~और~~ है और हरिप्रसन्नके प्रवेशसे पूर्वका श्रीकांतका निरानंद और जडतासे पूर्ण गार्हस्थ्य जीवन प्रसन्न प्रवाहमें बहने लगता है. इसका कारण तृतीय पक्षको आहत करनेकी अज्ञात भावनाको संतुष्ट कर सकनेका अवसर मिलना ही है." [3]

लाहौरसे घर लौटनेपर श्रीकांतको घरका वातावरण आनंदप्रदान लगता है. रीतेपन और फीकेपनकी समाप्ति होकर सुनीता श्रीकांतके लिए अधिक स्पृहणीय, काम्य और प्यारी बन गयी है. इसके लिए श्रीकांत ने केस लेकर लाहौर जानेका बहाना किया है और जाते जाते हरि को समझाया भी है कि- " सुनो मेरे पीछे अपनी भाभीको जरा भी कम न समझाना. हरिप्रसन्न मैं उन्हें पहचानते पहचानते भी नहीं,पहचाना हूँ- पाते पाते भी नहीं पाया हूँ . मुझे मालूम होता है कि तुम्हारे निमित्तसे मैं उन्हें अपने निकट पाऊँगा." [1] श्रीकांतकी यही इच्छा पूरी होती है. हरिप्रसन्नके जानेपर श्रीकांतके घरमें प्रसन्नता, सरसताका वातावरण छा जाता है.

साली सत्याके साथ हरिप्रसन्नका विवाह करनेकी श्रीकांतकी इच्छा असफल रह जाती है. सत्याके साथ उसका व्यवहार आत्मीय एवं स्नेहका है. मानव जीवनका नवमूल्यांकन और जीवनके प्रवाहका सरस विश्लेषण श्रीकांत सत्याव्दारा पाता है. सत्या अधिक चालाक और

---

३. हिंदी तथा मराठी उपन्यासोंका तुलनात्मक अध्ययन -शांतिस्वरुप - गुप्त संस्करण-१९६५ पृ.१९६५ पृ. २७९-२८०

१. सुनीता - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८० - पृ. १६०

मजाक करनेवाली लडकी होनेपर भी श्रीकांतके सामने होने से वह बचती उनमें मित्रता भाव पूर्ण रूपसे दिखायी देता है. स्त्री और पुरुष सुलभ आकर्षण उनमें नहीं है. दोनों एक दूसरेको समझाते हुये भी अनभिज्ञता व्यवहार करते हैं.

हरिप्रसन्नका तुफान चले जानेके बाद रमणीय सुनीताके दर्शन श्रीकांतको होते हैं. मानो खोया हुआ सुख और मनमांगी मुराद उसकी पूरी हुयी है. रातकी घटनाके बारेमें पूछताछ करनेके बदले वह सबेरे सुनीताको आलिंगनमें आबध्द कर देता है. सुनीता बुहारी करनेमें लगी है, इसके होश भी उसे नहीं रहते. - " इस व्यापारमें सुनीताके चेहरेपर मानो नव-वधू जैसा भाव आ गया. मानो कहती हो - " मैं तो सदा तुम्हारी हूँ, फिर छिः छिः ।, मेरे लिए यह प्रेमका आवेग कैसा ? और ऐसा धीरज क्यो खोते हो? मुझे तनिक संभलने भी तो दो. "[1] श्रीकांतके व्यक्तित्वमें जिस तरह मित्रके प्रति सच्ची कर्तव्यनिष्ठाकी भावना है; उसी तरह सुनीताके प्रति निश्कलंक प्रेम भी है. जिसके कारण ही वह अंतमें पत्नी सुनीतासे स्वर्गीय सुखकी अनुभूति पाता है.

## " त्यागपत्र " उपन्यासके पति पात्र :

### १. प्रमोद :

" त्यागपत्र " उपन्यासकी कथा कहनेवाला पात्र प्रमोद है. बुआ मृणालके प्रति उसके मनमें अगाध स्नेह और अपार ममता भरी हुयी है. डा. नगेंद्रने इसे मृणालके बढते हुये दर्दका तापमापक कहकर पुकारा है.

---

१. सुनीता - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८० पृ. २२५

प्रमोद नियतिमें भरोसा रखता है और जीवनको मोडनेकी लालसा उसमें नहीं है. इस व्यक्तिका जीवन सफल रहा है. उपन्यासकी नायिका और अपनी बुआ मृणाल के बारेमें वह कुछ भी नहीं कर सका, इसकी वेदना उसके अंतरंगमें पैठी हुयी है. अतः बुआकी मृत्युका समाचार सुनतेही वह अपनी मर्जीसे त्यागपत्र देता है.

पारिवारिक संपन्नता, धन और सामाजिक प्रतिष्ठा प्रमोदने संजोयी है. एक बालकके रूपमें उपन्यासके प्रारंभिक भागमें उसका परिचय होता है, वह मृणालका स्नेहभाजन है. बुआ स्कूलकी सारी बातें उससे कहती है. बुआके प्रति प्रमोदका आंतरिक खिंचाव अधिक महत्वपूर्ण रहा है. माता-पिताके बदले मृणालके बारेमें प्रमोद अधिक सोचता है. बाल्यकालसेही उसकी चिंतनकी प्रवृत्ति रही है. बुआके कार्य-व्यापारोंको समझानेका उसका प्रयास है. बालक प्रमोदको मृणाल हमेशा समझाती रहती है. इसके संदर्भमें प्रमोद कहता है कि- " धीमे-धीमे हम बडे होते गये और बुआ बुध्दिमती होती गयी. मुझे उनकी उपस्थितिमें बडा ढाढस रहता था ~~और मैं, उनके साथके लिए हर वक्त भूखा रहता था~~ और मैं उनके साथके लिए हर वक्त भूखा रहता था. जब वह मुझे मिलती, बडे मीठे-मीठे उपदेश दिया करती थी. देखो, बेटा बडोंका कहना मानना चाहिए. अच्छे लडके आगे जाकर बडे आदमी बनते हैं." [१] बुआकी यह वाणी अंतमें सही निकली. प्रतिष्ठाप्राप्त वकील बनकर प्रमोद जज बन गया. वह महत्वाकांक्षी युवक है. बुध्दिजीवी रहनेसे उसका चिंतन प्रखर है. सृष्टिकी अगाध लीलाको समझानेकी और उसके रहस्योंको जानने की वह कोशिश करता है. सत्यके प्रति उसके मनमें आग्रह है. परिणामतः राजनंदिनीके पिताजीसे वह मृणालकी सत्य जानकारी प्रदान करता है. उदारता, दातृत्व, अगाधचिंतन, सत्यनिष्ठा ये प्रमोदके गुण रहे हैं.

---

१. त्यागपत्र - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७९ पृ. १०

प्रमोदकी पत्नीका नाम उपन्यासमें नहीं मिलता. बुआके कारण राजनंदिनीसे उसकी शादी नहीं हो सकी. विवाहोपरांत पति-पत्नी सुख तथा चैनमें जीवन बीता रहे हैं. घरमें प्रमोदकी धाक है. वह कहता है - " अब तो घर मेरा अपनाही रह गया है, बुआ ! ब्याह हो गया है. मेरी हुकूमत है. तीसरा कोई नहीं है. चलो, अब तुम्हारीही राज होगा. "[१] बुआके सिवा पारिवारिक सुख प्रमोदको अच्छा नहीं लगता.

माता-पिताके साथ रहते- वक्त प्रमोद बुआके विचारोंको अधिक महत्व देता था. यद्यपि माताका कहना उसे माननाही पडता है; फिर भी माता-पिताके प्रति मृणालको लेकर उसके मनमें हमेशा विद्रोह रहा . अतः मां ने मना करनेपर भी वह बुआको ढूँढता रहता है. x उसकी मदद करना चाहता है. लेकिन वह मदद लेना नहीं चाहती. इसपर वह विवश बन जाता है. प्रौढ फूफाके साथ बुआकी शादी हो जानेपर वह फूफासे भी क्षोभित हो जाता है. जैनेंद्रके अन्य पात्रोंके समाना आत्मपीडा प्रमोदमें भी पायी जाती है. " आत्मपीडाकी चेतना प्रमोदके चरित्रमें भी मौजूद है. किंतु इसका रूप पश्चात्तापसे अभिषिक्त है. मृणालकी नाईं प्रमोदकी वेदना- ग्राहकता न तो कोई साधना है, न कुंठा. उसमें एक केवल पश्चात्ताप है, बुआकी सहायता न कर सकनेका, बुआको न उबार सकनेका. "[२] सामाजिक प्रतिष्ठा कायम रखनेके लिए, बुआका उध्दार करनेकी इच्छा मनमें होनेपर भी प्रमोद सहायता नहीं कर सका. इसके कारण वह अपने-आपको क्षुद्र महसूस करता है.

---

१. त्यागपत्र - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७९ पृ. ८५

२. उपन्यासकार जैनेंद्र : मूल्यांकन और मूल्यांकन -
- डा.मनमोहन सहगल प्रथम संस्करण १९७६ पृ. १५०

सचाई और ईमानदारी बचपनसेही प्रमोदके व्यक्तित्वमें पायी जाती है. माता, राजनंदिनी ,राजनंदिनीकी माँ,मृणाल, अस्पताल की हैंड-मिस्ट्रेस आदि नारियोंके प्रति उसका व्यवहार श्लाघनीय रहा है. जो बुआका प्रिय रहा, वही उसे भी प्रिय है. शीलाका भाई और कोयलेवाला बुआको प्रिय रहनेसे उनके प्रति प्रमोदका व्यवहार सम्मानजनक रहा है. जीवनमें आगे बढ़नेके लिए वह अनवरत कष्ट झेलता है. बी.ए.मे. पोजीशन लानेके लिए प्रयत्न करता है. मृणालके चरित्रका उद्घाटन इस पात्रद्वारा हुआ है. माताद्वारा मृणालसे अन्याय होनेपर वह माँ को भी खरी-खोटी सुनाता है. बुआको ढूँढनेके लिए वह कहाँ-कहाँ नहीं जा सकता ?. कोयलेवालेकी दूकान,अस्पताल,सडाँध समाज आदि स्थानोंपर जाकर वह बुआकी सहायता करना चाहता है. लेकिन उसकी मदद करनेमें वह सफल नहीं होता. उसके लिए प्रमोदके मनमें गहन पीडा रही है. " अंततः बुआकी दुःखद मृत्युकी घटनाके आघातसे वह हिल उठा है, और इस संपूर्ण दुःखभरी गाथाकी स्वयंको उत्तरदायी पाता है. समाजके प्रति मूक आक्रोश ,बुआके प्रति गहन करुणा और निष्क्रियताके प्रति अवसादसे भरकरवह एकाएक त्यागपत्र देता है. उसका त्यागपत्र मानो एक दुःखी भारतीय नारीपर हुये अत्याचारोंका प्रायश्चित है."[१] प्रमोदके पारिवारिक रस्मरिवाज पुरानी परिपाटीके रहे हैं. मर्यादाओंका उल्लंघन वहाँ नहीं किया जा सकता. प्रमोदकी माता मृणालको आदर्श आर्य गृहिणी बनाना चाहती थी. शायद इन संस्कारोंका असर प्रमोदके मनपर रहनेसे, प्रबल इच्छा रहनेपर भी प्रमोदने मृणालकी सहायता न की हो. " प्रमोद सभ्यता,संस्कृतिकी बनी-बनाई दुनियाकी व्यवस्थामें विश्वास करनेवाला व्यक्ति है. जीवनके ओर देखनेके लिए और उसके मूल्यांकन के लिए उसके पास एक मापदंड है. जिसके सहारे वह हर-एक चीजकी कीमत पहचानता है. उसके जीवनमें स्थिरता है. उसके संसारमें सारे आदर्श स्थिर है."[२]

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन-डा.बलराजसिंह-राजा प्रथम संस्कर १९७८ पृ.३५५

२. आधुनिक हिंदी उपन्यास (संनरेंद्रमोहन) "त्यागपत्र-जैनेंद्रकुमार पृ.८६ डा. देवराज उपाध्याय" संस्करण १९५५ पृ. ८

२. प्रमोदके फूफा :

" त्यागपत्र " उपन्यासकी नायिका मृणालके पतिको उपन्यासमें " " प्रमोदके फूफा " नामसे पहचाना जाता है. इस व्यक्तिने विधुर हो जानेपर मृणालसे दुबारा विवाह किया है. उसके बारेमें प्रमोद कता है कि " ब्याहके वक्त मैंने अपने फूफाको देखा था. उनकी बडी-बड़ी मूँछे थी. और उम्र ज्यादा मालूम होती थी. डाल-डौलमें खासे थे. मुझे यह पीछे मालूम हुआ कि उनका त्र यह दूसरा विवाह था." [१] अनमेल विवाह हो जानेसे इस दूसरे विवाह से भी सुखैकी प्राप्ति प्रमोदके फुफाको नहीं हो सकती. वह संपन्न परिवारका धनी व्यक्ति है. लेकिन उसका स्वभाव अत्याधिक संदेहशील है. मृणालकी अवस्था और उसके सरल हृदयके प्रति उसके मनमें तनिक भी सहानुभूति नहीं है. " इस व्यक्तिकी स्थिति ऐसी प्रतीत होती है कि इसे उस अवस्थामें पत्नीकी अपेक्षाही नहीं थी, केवल एक नव-कलिका रस-पान करनेकी इच्छाने उसे विवाह-स्विकृतिकी प्रेरणा दी थी. उसकी ईर्ष्या और संदेहकी संवेगात्मक स्थितिका प्रभाव था कि गर्भ-भार ढोती हुयी मृणाल जब उसकी दैहिक ज्वालाको नहीं बुझा पाती, तो वह उसपर लांछन लगाकर उसे तिरस्कृत करता है. " [२] बेतोंसे मृणालको पीटता है और घरसे अलग कर देता है. मृणालके प्रति उसके मनमें ममता नहीं है. अनमेल विवाह के कारण पति-पत्नी का जीवन दुःखद बन गया है. रुढिवादिता और संकुचित प्रवृत्तिके कारण वह पत्नीको दासी बनाना चाहता है, जो मृणालको अस्वीकृत है. फूफाके पास वाकूचातुर्य है . उसका स्वभाव दंभी है. पत्नी मृणाल उससे नफरत करती है।

३. कोयलेवाला :

पतिपरित्यक्ता मृणालके यौवनका लाभ उठानेवाला व्यक्ति कोयलेवाला है. इस व्यक्तिकी पत्नी जीवित होकर भी यह पात्र

---

१. त्यागपत्र - जैनेंद्रकुमार - संस्करण १९७८ पृ. १६

२. उपन्यासकार जैनेंद्र : मूल्यांकन और मूल्यांकन डा. मनमोहन सहगल प्रथम संस्करण १९७६ प, ५४

मृणालसे छुपा-छुपा संबंध रखता है. बादमें खुला व्यवहार रखकर अन्य नगरमें जाकर मृणालके साथ रहने लगता है. मृणाल की सहायताके लिए वह हर क्षण तत्पर रहता है. मृणालकी दुर्बलताका इसने लाभ उठाया है. कुछ कालतक पत्नीको छोडकर मृणालके साथ मौज करनेके लिए वह नगरमें आता है. " वह बनिया, वास्तवमें, मृणालका प्रेमी नहीं है. वह तो मृणालके रूपको लोभी, लंपट भौरा मात्र है. उसको मौसमी प्रेमी कह सकते हैं. जबतक मृणालपर रूपकी बहार है, वह उसे प्यार करता है, उसके साथ रहतो है, उसके सुख-दुःखके बारेमें सोचता है, लेकिन वासना-पूर्ती हो जानेपर वह उसे दरिद्रावस्थामेंही छोडकर चला जाता है. इसके उपरांत वह मृणालकी कोई खबर नहीं लेता है." [१] उसका रस लूटकर चला जाता है. मृणालको निराश्रित करता है. कोयलेवालेके व्यक्तित्वमें शठता है.

कोयलेवालेके साथ रहते-वक्त मृणाल पति- धर्मकी नयी व्याख्या करके कायेलेवालेको पति रूपमेंही देखती है. कोयलेवाला उसे छोडकर जानेवाला है. यह जानकर भी मृणाल कोयलेवाले को संतुष्ट करनेके भरसक प्रयत्न करती हैं. घरमें कुछ समयतक वासनापूर्तिका मार्ग रूद्ध हो गया है यह देखकर कोयलेवाला मृणालकी विवशताका लाभ उठाता है. उसमें वासनाकी तृष्णा महत्वपूर्ण रही है. उसका जीवन यथार्थ जीवन है मृणालद्वारा वासना-पूर्ति न होनेपर वह अपने परिवारमें वापस लौट जाता है. बाल-बच्चोंकी याद उसे सताती है. उसके व्यक्तित्वमें धूर्त-मनोवृत्तिके दर्शन हमें होते हैं.

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन -
- डा. बलराजसिंह राणा-प्रथमसंस्करण १९७८ पृ.१६५

" कल्याणी " उपन्यासके पति पात्र :-

१. वकील -

" कल्याणी " उपन्यासकी कथा कहनेवाला पात्र वकील है. विचारशीलता और संवदेनशीलता उनके प्रधान गुण हैं. कल्याणीके प्रति उनके मनमें सहानुभूति है, लेकिन प्रारंभसे अंततक वे उसके प्रति तटस्थ भावसे देखते हैं. डा. असरानी वकील साहबके मित्र हैं. नयी शादी होनेपर डा.कल्याणीको लेकर डा. असरानी वकीलसाहब के घर आते हैं. जहां कल्याणीको हिंदी भाषामें रचित कविता सुनानेके लिए मजबूर किया जाता है. "प्रबाल" जी और श्रीधरजी वकील साहबके मित्र हैं.

वकील साहबका जन्म देहातमें हुआ है.[१] वकालतमें नाम कमानेके लिए वे देहली आये हैं. जहांपर किसी अन्य सार्वजनिक कार्य या राजनीतिक दलोंसे उनका संबंध नहीं है. " कल्याणी" उपन्यासकी प्रधान पात्री डा.कल्याणीके समूचे जीवनका तटस्थ दर्शक वकील बने हैं. असरानी दंपतिमें झगडा होनेपर दोनोंको समझानेका काम वे करते हैं. कल्याणी सुशिक्षित और विदेशी शिक्षा प्राप्त विदुषी है. हर्ष, विषाद,सन्मान आदि सभी स्थितियोंमें कल्याणीको आधार देनेका काम वकील साहेबके जिम्मे आया है. " (वकील साहेब) प्रत्येक घटनाका सहज ढंगसे विश्लेषण करता है. अधिक समयतक घटनाका बोझा अपने मनपर न रखना उसे रुचिकर नहीं है. वकीलका पेशा वकालत होनेपर भी वह सहृदय है. ....विपत्तिके समय दूसरोंके प्रति सहानुभूति-पूर्ण

---

१. कल्याणी - जैनेंद्रकुमार संस्करण जनवरी १९७९ पृ. ×/ १२६

व्यवहार रखना उसका स्वभाव है." [1] क्रांतिकारी " पाली घर आनेपर उससे वे सहृदयतासे व्यवहार करते हैं. कल्याणीके ट्रस्टका वे मेंबर बनते हैं. " भारतीय तपोवन" का सपना साकार बनानेके लिए वकील-साहबही एकमात्र भरोसेमंद आदमी है, यह कल्याणी जानती है. अतः तपोवनकी भूमि कल्याणी वकीलजीको दिखाती है.

वकील साहब मर्यादाओंमें जीनेवाली व्यक्ति हैं. उनका उल्लंघन उनसे नहीं होता. अहिंसापर उनका पूरा विश्वास है. गृहस्थ-धर्म और वकालत कर्म छोडकर अन्य कारोबार उनके लिए अश्रेयस्कर दिखायी देता है. कल्याणीके साथ अधिक संबंध प्रस्थापित होनेपर और उनके कार्य व्यापारोंमें विस्तार आनेपर वे लिखते हैं - "पर यह मैं. क्या कह रहा हूँ ? अपने हकसे शायद मैं आगे जा रहा हूँ . दुनियामें औरोंकी तरह घर-बार घेरकर मैं भी अपने तई बस रहा हूँ. विस्तारसे बचा हूँ और सुरक्षाकी चिंतामें अपनेको बराबर जकडकर घटाता रहा हूँ. वकालत की है, कमाई की है. कुनबा बनाया है, हवेली बनायी है. इसतरह अहंकारका पसारा पसारकर अहं घात किया है. शरीरको फुलाया और आत्माको लुंज किया है." [2] वकील साहब कभी निराश या नाराज नहीं होते. ईश्वरने जिस अवस्था और परिस्थितिमें जीनेके लिए उन्हें विवश किया है. वही स्थितियाँ उन्हें प्रिय हैं. डा. असरानीकी कल्याणीके प्रति निष्ठुरतासे वे मन-ही-मन पीडित है. और सामाजिक दृष्टिसे कुछ न कर-सकनेके कारण वे दार्शनिक तटस्थतासे संतुष्ट हो जाते हैं, उनका नियतिपर विश्वास है. प्रारब्धको लाँघनेकी शक्ति उनमें नहीं है. डॉ. कल्याणी असरानी अपने दोनों बेटियोंका ( विभा और प्रभा ) बोझा वकील साहबपर रखना चाहती है - " मैं भला किस बिरते मरना न चाहूँ ? लेकिन बालक अभी छोटे हैं. हाँ, मैं यह कहने आयी थी कि मेरे पीछे क्या छोटीको अपने पास ले

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन.- डॉ.बलराजसिंह राणा- प्रथम संस्करण १९७८ पृ. १५७.

२. कल्याणी जैनेंद्रकुमार संस्करण जनवरी १९७९ पृ. ८९

सकेंगे ? बड़ी तो सदाकी रोगिणी है. मेरे बाद उसे भी अधिक जीना नहीं होगा. पर छोटीका मुझे ख्याल होता हैं." १ कल्याणी वकील साहबपर पूरा विश्वास रखती है.

वकील साहब आधुनिक विचारोंके वाहक हैं. समझदार पत्नी उन्हें मिली है. वकील दंपति सुख तथा समृध्दतामें जीवन बीता रहे हैं. अच्छी कमायी, प्रतिष्ठा और बेटे विभूतिके कारण वे संतुष्ट है.

२. डॉ. असरानी -

" कल्याणी" उपन्यासकी नायिका कल्याणीके पति डा. असरानी हैं. इनके पहली पत्नीकी मृत्यु हो चुकी है. कल्याणी जैसे सुंदर, विदुषी और विदेशी शिक्षा प्राप्त नारीपर अनेक लांछनोंका आरोप करके और बादमें उसके परिवारका रक्षण करनेके लिए डा. असरानी उससे शादी करते हैं. कुछ लोगोंका मत हैकि उन्होंने अपनी पहली पत्नीकी हत्या की है. धन और कीर्ति पाना डा. असरानीके जीवनका चरम लक्ष्य है. शादीके उपरांत दोनों पति-पत्नी वकील साहबसे भेंट करते हैं. तभी असरानी कल्याणीके काव्यकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं. साहित्यसे उन्हें कतई सरोकार नहीं है. फिर भी कल्याणीको संतुष्ट करनेके लिए वे उसे भारतकी सर्वश्रेष्ठ कवयित्री साबित करना चाहते है. कल्याणीद्वारा रोषपूर्ण भावसे देखनेपर भी वे नारी-मुक्तिका ढिंढोरा पीटते हैं. लेकिन वास्तवमें बात वैसी नहीं है. डा. कल्याणी डा. असरानीकी बंदी बन गयी है. कल्याणीके विचारों और आचारोंपर आसरानीका अंकुश है. " कल्याणी सदा पश्चातापकी अग्निमें जलती रहती है पर किस बातका पश्चाताप है, यह अंततक स्पष्ट नहीं होता. कल्याणीके पति डाक्टर

---

१. कल्याणी - जैनेंद्रकुमार संस्करण जनवरी १९७९ पृ. ५३

१. [illegible]

असरानी पुराने विचारोंके पति होनेके नाते कल्याणीको पूर्ण रूपमें गृहिणीके रूपमें देखना चाहते हैं. .......कल्याणीके सामने एक ओर विलायती ठाठ-बाट और शिक्षा-संस्कृतिकी भौतिक चकाचौंध है, दुसरी ओर भारतीय गृहस्थीका प्राचीन आदर्श . ....इन दोनों विरोधी आदर्शोंका विषमताके द्वंद्वमें वह स्वयं समाप्त हो जाती है. पति उसपर दुश्चरित्रताका दोषारोपण करके उसे मारते-पीटते हैं. पर कल्याणी चुप रहती है- सबकुछ सहती है."[1] डा. असरानी धूर्त प्रकृतिका और लोभी व्यक्ति है. अतः अपनी आय कम होरही है, यह देखकर कल्याणीको डाक्टरीका व्यवसाय शुरु करनेके लिए वे विवश करते हैं. कल्याणीके प्रैक्टिस की सफलता असरानीसे देखी नहीं जाती. पाशवी वृत्ति और शंकालू स्वभावके कारण वे उसपर लांछन लगाते हैं. रायसाहब, डा. भटनागर आदिसे वे उसका संबंध जोडते हैं.

डा. असरानी धनकी प्राप्तिके लिए तडप रहे हैं. आर्थिक संपन्नता प्राप्त करनेके लिए वे बंबईतक जाते हैं. गुंडोंद्वार आपत्तिमें ग्रस्त होकर निराश, लाचार बनकर घर वापस आते हैं. अपनेसे बढकर कल्याणीको सम्मान प्राप्त होता जा रहा है, यह उनसे फूटी आँखोंसे देखा नहीं जाता. भरे रास्तेमें वे कल्याणीको जूतोंसे पीटते हैं. डा. भटनागरके घरकी तलाशी लेते हैं. पत्नीको कराची भेजा है, ऐसी बात फैलाकर कल्याणीको घरमें बंद कर देते हैं. गर्भवती पत्नीको छोडकर विदेश जानेकी सोचते हैं. उनके विचार नीच होनेसे समाजमें वे बदनाम प्रवृत्तिके आदमी हैं.

---

१. हिंदी उपन्यासोंमें नारी-डा. शैल रस्तोगी संस्करण प्रथम १९७७ - पृ. १३८.

मानहानि, आर्थिक कठिनाईयाँ, डाक्टरीमें असफलता प्राप्त होनेपर भी वे जीवनमें पराजयका अनुभव करना नहीं चाहते. रायबाहब, सार्वजनिक नेता, महिला समाज आदिके प्रति उनके मनमें उव्देग होनेपर भी वे अपना रोष प्रकट नहीं कर पाते. अपने मनकी गांठ केवल वे वकील साहबके सामनेही खोल सकते हैं. अन्योंसे वे मनकी कुछ भी नहीं बता सकते; पत्नीसे भी नहीं. कल्याणीसे विवाह करनेपर भी वे संतुष्ट नहीं हैं.- " - पर विवासे भी क्या मनोरथ मेरा पूरा हुआ ? ओ.... नहीं. पाना चाहा उसको पा नहीं सका, शायद उलटे बिगाड ही सका. ....,.गृहस्थके लिए अर्थोपार्जन ही मुख्य हैं. घर तो सबकुछ चलता ही है. पर एक बार कमाई अच्छी कर ली गई, तो सदाको निश्चिंतता हो जायेगी."[१] स्वार्थपूर्तिके लिए निम्न तरीका, कपट दुश्चरित्रता आदि सभी मार्गोंका अवलंबन वे करते हैं. कुटिलमतिका उच्चतम रूप असरानीके व्यक्तित्वमें समाया हुआ है. असरानीकी पत्नी कल्याणी परंपरागत पातिव्रत धर्मका पालन नहीं कर सकती पति सेवा, एक निष्ठ, " पतिकोही अपनी गति" स्वीकार करनेवाली वह नहीं है. वह पति को व्यक्ति नहीं बल्कि प्रतीक मानती है. उसके व्यक्तित्वमें आधुनिक विचार पाये जा सकते हैं. " डा.कल्याणी नौकरी और पातिव्रत दोनोंका साथ निर्वाह नहीं कर सकती. वहकहती है कि यदि नौकरी करनी है तो पातिव्रतके कठोर संस्कारोंको शिथिल करना पडेगा[२] कल्याणीकी जगह यदि दूसरी नारी होती, तो शायद ही डा.असरानीके अत्याचार उसके व्दारा सहे जाते.

डाक्टरीकी पढाई करते समय कल्याणीका प्रेम अपने सहपाठी " प्रीमियर" से रहा था. इसे डा. असरानी जानते हैं. अत: अपना काम पुरा करनेके लिए वे प्रीमियरका सम्मान करते हैं. उन्हें उपहारके

---

१. कल्याणी-जैनेंद्रकुमार संस्करण जनवरी १९७९ पृ. १३६

२. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास: मूल्य-संक्रमण -डॉ.हेमेंद्रकुमार पानेरी. प्रथम संस्करण - १९७४ पृ. ७७.

रूपमे विविध चीजें देते हैं. प्रीमियर और कल्याणीकी स्वतंत्रताको न रोककर वे उन्हें बढावा देते हैं. " उसे डालियाँ दी जाती हैं, उसके लिए उपहार खरीदे जाते हैं और कल्याणीकी पूर्व-मित्रताका आश्रय लेकर उससे स्वार्थ-सिध्दिकी अनेक योजनाएँ बनायी जाती हैं. जब भी आप डाक्टर असरानीको संकीर्ण मनोवृत्तिका पुरुष कहेंगे ? विवाह पूर्वके किसी प्रेमीको स्वतंत्रतापूर्वक मिल सकनेकी छूट दे सकना, डा. असरानीका क्रांतिकारी कदम है, सराहनीय भी है."[१] लेकिन यह स्वतंत्रता उनकी पत्नी कल्याणीके लिए स्वीकृत नहीं है.

कल्याणी व्दारा डाक्टरीकी प्रैक्टिस शुरु करनेपर उनका दांपत्य जीवन दयनीय बन जाता है. असरानीकी सारी आकांक्षाएँ पूरी नहीं हुयी. मानो ग्राहस्थ्य धर्मसे पलायित होना ही असरानीके दांपत्य जीवनका धर्म बना है. स्वार्थ के कारण वे भावना-शून्य बने हुये हैं. उनके हृदयमें निर्ममता, मित्रत्वमें कपट और साहचर्यमें स्वार्थ भरा हुआ है. स्वार्थके लिए पत्नीकी वे जितनी खुशामद और चापलूसी करते हैं, उतनीही वे उसपर लांछन करके जूतोंसे पीटकर, प्रताडते भी हैं.

कल्याणी सरीखी नारी-रत्नको पत्नीके रूपमें पानेके लिए उन्होंने विभिन्न प्रयास किये हैं. उनके दृढ संकल्पमें शठता नजर आती है. वे बडे कर्मठ हैं. यद्यपि उनकी मनोवृत्ति संदेहसे ओतप्रोत है, फिर भी कल्याणीके प्रति उनके मनमें उत्कट प्रेम है. उसकी कविताकी प्रशंसा और उसके व्दारा बनाये गये मंदिरकी तारीफ करते हैं. क्रोधसे उसे घरके बाहर निकालते हैं. और बादमें कल्याणीको खोजते भी है.

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्र : मूल्यांकन और मूल्यांकन - डा. मनमाहेन - प्रथम संस्करण-जुलाई १९७६ पृ. १६४

उसकी चिंतामें परेशान होते हैं. सामान्य सांसारिक जीवके सभी गुण और दोष उनमें पाये जाते हैं.

## " सुखदा " उपन्यासका पति पात्र :-

### १. कांतस्वामी -

जैनेंद्रकुमारके " सुखदा" उपन्यासकी नायिका सुखदाके पति मिस्टर कांत है. देशकी परतंत्रताके दिन हैं. गृह-गृहस्थी चलानेके लिए उन्होने क्लर्की व्यवसाय स्वीकृत किया है. मासिक १५० रुपयोंकी आय है. बल्कि उनकी पत्नी सुखदा इस पारिवारिक व्यवस्थासे असंतुष्ट है. उसकी चाह विवाहके पहले अलग थी. वह विलायत जानेवाले युवकसे विवाह करना चाहती थी. बल्कि माताव्दारा मना करनेपर उससे वह हो नहीं सका. सुखदा-विवाह-पूर्व भावी पतिके विषयमें चित्र बनाती है कि - " उनकी आमदनी सातसौ, आठसौ रुपये होनी चाहिए. मोटर तो पास होना अनिवार्य है. थोडे दिन बाद विवाह हुआ तो इनसे ,इनका वेतन कुल डेढ सौ...."[१] पत्नी सुखदा हमेशा सुख और समाधानमें रहे यही कांत की राय है. उसकी स्वतंत्रतामें रुकावट वे नहीं डालना चाहते. पुरुषके समान स्त्री भी स्वतंत्र हो सकती है, अपने विचारोंको व्यक्त कर सकती है और उसमें अन्योंव्दारा बाधा उपस्थित नहीं होनी चाहिए; इस मत और विचारपर वे अडिग हैं. परिणामतः दामादके प्रति प्रशंसोद्गार निकालती हुयी सुखदाकी माँ कहती है. -" वह बेचारा रहनेवाला कौन होता है. तू जैसे रखती है, वैसे रहता है. सुखदा तुझे कहती हूँ,

---

१. सुखदा - जैनेंद्रकुमार - संस्करण १९७८ - पृ. ९

देवतासा पति तुझे मिला है. उसे तू खोयेगी तो दोनों लोकमें तेरे लिए जगह नहीं है. देख, मानमें मत रहा कर."[1]

शादीके उपरांत कुछ वर्षोंतक कांत-स्वामीका जीवन सुखमें व्यतीत होता है. पति-पत्नी दोनोंमें सद्भाव है. वर्तमानकी आवश्कताएँ और भविष्यकी चिंताएँ इन्हें सताती नहीं. घरकी रखवाली और देखभाल के लिए नौकर हैं. विवाहके डेढ वर्ष बाद पहला बालक हुआ -विनोद. " बच्चा होनेके बाद भी (सुखदाके) उसके जीवनमें अतृप्ति बनी रहती है. तभी सुखदाका परिचय क्रांतिकारी लालसे होता है. उसके अहम् को अभिव्यक्तिकी राह मिलती है. पति "नीरस" "सामान्य" और "कायर" मात्र लगने लगता है. .....उसके पति कांतको जब सुखदा और लालके प्रेमका निश्चित प्रमाण मिलता है तो उसके हृदयमें विरोध नहीं उठता."[2] पत्नीकी उमंगोंसे कांतस्वामी परिचित हुये हैं. सुखदा जो और जैसा कहे कांतस्वामी स्वीकृत करते हैं. निश्छल स्नेह और आदरसे पत्नीका स्वीकार उन्होंने किया है. आज्ञानुवर्तीकी स्थिति कांतस्वामीने स्वीकृत करनेपर सुखदा अपने मानको भूल जाती है. लेकिन बादमें वह असंतुष्ट बन जाती है. घर गृहस्थी अच्छी रहनेपर भी सुखदामें "अहं"की भावना प्रबल बनती है.

नौकरके रूपमें "प्रभात" का कांतस्वामीके घरमें प्रवेश हो जानेपर मि. कांतका सारा जीवन-पट ही परिवर्तित हो जाता है. पत्नी घरकी नहीं रहती. सामाजिक बन जाती है. क्रांतिकारी दलकी उपाध्यक्षा बन जाती है. घरकी अपेक्षा उसका अधिक समय नयी जीवन-प्रणालीमें ही व्यतीत होता है. कांत-स्वामी उसे स्वयं ही उसे

---

१. सुखदा - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७८ पृ. ६१

२. हिंदी उपन्यासोंमें नारी - डा. शैली रस्तोगी संस्करण - प्रथम १९७७ पृ. १३९

उस ओर बढनेके लिए बढावा दे रहे हैं. कांतस्वामीका अधिक समय कार्यालयमें बीत जाता है. फाईलें घर लाकर रातमें अधिक देरतक वे कामोंमें व्यस्त रहते हैं. राष्ट्रके बारेमें पति कुछ भी नहीं करता, यह देखकर सुखदा चिंतित बनती है. सोचती है कि - " मेरे यह पति कितने नीरस और सामान्य जान पडते हैं. मुझे मालूम होता था कि यों न चलेगा. पतिमें यदि कुछ नहीं है तो मुझे ही उठाना होगा."[१] लेकिन पतिव्दाराही सामाजिक जीवन प्रणालीसे संबंध हो सकता है, इसे सुखदा कभी भूलती नहीं.

हरीश कांतस्वामीका घनिष्ठ मित्र है. क्रांतिके गुटका प्रमुख वही है. परिणामतः अपने बालमित्रके लिए सबकुछ करनेके लिए कांत तैयार है. "लाल" के बारेमें उनके हृदयमें व्देष है. बल्कि जैसे-जैसे सुखदा लालके प्रति आकर्षित होती है, वैसे वैसे कांत क सुखदाको और लालको अधिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं. पति-पत्नीमें बंधनोंकी कडाई नहीं रहती अतः सुखदा और लालको मिलनेकी सुविधाके लिए पतिराज कांत एक कमरेमें उनके शयनका आयोजन करते हैं.

क्रांतिकारियोंके दलके प्रति कांत-स्वामीके मनमें अपार सहानुभूति है. हरीशके कहनेपर अपना सोना गिरवी रखकर बहुतसे पैसे वह उसके पास भेज देता है. सरकारी नौकरीके कारण उनका साथी वह हो नहीं सकता. अपने घरमें उन्हें आश्रय दे सकता है. " सुखदा " वस्तुतः क्रांतिकारियोंके बीच आना चाहती है. जहाँ हरीश है, लाल है, जहाँ अनबूझा और रंगीन है परंतु वह अपनी माँ से कहती है कि खर्च ज्यादा है? कुछ काम करने लगूँ, कभी वह सोचती है कि देश और क्रांति कर्तव्यकी चुनौती है."[२] सुखदाके

---

१. सुखदा - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७८ - पृ. १८

२. जैनेंद्रके उपन्यासोंका शिल्प - ओमप्रकाश शर्मा प्रथम संस्करण - १९७५ - पृ. ६७

विचारोंसे परिचित होनेपर कांतस्वामी क्रांतिकारियोंके घरमें रहनेके लिए उसे अनुमति देते हैं. उसकी वहां अलग व्यवस्था करते हैं. सुखदा प्रबुध्द अहं की नारी होनेके कारण ही अपने पतिसे समझौता नहीं कर पाती. परिणामतः पारस्परिक प्रेम होनेपर भी अपने अहं के कारण वे एक दूसरेके निकट आनेकी जगह दूर होते जा रहे हैं.

कांतस्वामी "जमना" पर परममित्र हरीशके साथ रहते हैं. क्रांतिकारी लाल की हत्या करना चाहते हैं. लेकिन हरीश लालको चाहता है. अतः दल बिखर जानेपर अपनी गिरफ्तारी कांतस्वामी है. "कांत तुम मेरे बंधु हो. एक काम तुम्हें करना है. सरकारके पास पाँच हजार रुपये मेरे नाम के रखे हैं. सरकार मुझे चाहती है, इतना कि जो मुझे पानेमें सहायता दे, उसे पांच हजार देनेको तैयार कर दो कि जाओ, उन्हें मेरी खबर दे दो."[१] मन न चाहनेपर भी मित्रतावश कांतस्वामीको सबकुछ करना पडता है. हरीशको वे बचाना चाहते हैं, लेकिन हरीश बचना नहीं चाहता. पुलिससे पाँच हजार रुपये लेकर रातमे जब वे घर आते हैं तो बडे तडके तक वे रोते रहते हैं. केवल सुखदाको छोडकर अन्य किसीसे यह भेद बताते नहीं.

कांतस्वामीमें निष्क्रियता काम कर रही है. वह दब्बू स्वभावका पति है. आय सीमित रहनेके कारण उसकी समूची महत्वाकांक्षाएँ नष्ट हो चुकी हैं. पत्नीसे व अपार स्नेह करते हैं ; लेकिन सुखदा कांतस्वामीकी ओर आदरकी दृष्टिसे देखती नहीं. रातके समय दोनों अलग हो जाते हैं. घर एक होनेपर भी पति-पत्नी दो धाराओंमें बह रहे हैं. सौम्य मुख, बद्ध कर्तव्य और नियत-नियुक्त कांतस्वामीके

---

१. सुखदा - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७८- पृ. १८३

भावोंमें कभी परिवर्तन नहीं होता. मूलता: वे गांवके रहे हैं.
" कांतस्वामी अपने आपको सुखदाके योग्य नहीं समझता है. इसी कारण उसका व्यवहार याचनापूर्ण है. वह हमेशा पत्नीके प्रति स्निग्ध और कोमल बना रहता है. उसका यह पुरुषत्वहीन व्यक्तित्व सुखदाके लिए और भी कोमल हो जाता है. वह अपेक्षा रखती है कि पति अधिकार भावना से उसे गलत कामके लिए डांटे-डपटें. इसके विपरित पति अत्यधिक विनम्र और उसका अनुगत है." [१]

अहंकारकी निर्मितीसे सुखदा पतिसे अलग हो जाती है. अस्पतालमें वह पतिसे मिलना नहीं चाहती. माताव्दाराही पतिको संदेशा भेजती है. वैसे देखा जाय तो मिस्टर कांतस्वामी हतभागी और निष्क्रिय प्रवृत्तिके व्यक्ति हैं.

" विवर्त " उपन्यासके पति पात्र :

१. बैरिस्टर नरेशचंद्र -

अंतर्व्दंव्दसे कोसों दूर रहनेवाले और दुविधाको अपने मनमें स्थान न देनेवाले "विवर्त" उपन्यासकी नायिका भुवनमोहिनीके पति बैरिस्टर नरेशचंद्र हैं. विलायतसे वकालत पास करके जैसेही वे स्वदेश लौटे हैं, तभी उनका विवाह भुवनमोहिनीसे हुआ है. स्वस्थ प्रकृति, शांत प्रवृत्ति तथा निरामय एवं निरागस जीवन ये उनके प्रधान गुण है.

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन -
- डा. बलराजसिंह राणा प्रथम संस्करण १९७८ पृ. १२८

विवाहको चार वर्ष पूरे हुये हैं. अभीतक घरमें बच्चा पैदा नहीं हुआ है. नरेशचंद्र आदर्शमें जीनेवाले व्यक्ति हैं. वे जिंदगीमें किसी भी प्रकारकी रोक-टोक नहीं चाहते .

पत्नी भुवनमोहिनीके प्रति वे स्वतंत्रतासे व्यवहार करते हैं. बाईस तेईस वर्षकी युवतीके पास उसका अपना अतीत हो सकता है, इसे मानकर, उसके बारेमें सोच विचार न करते हुये वर्तमानके बारेमें सोचते हैं. " जैनेंद्रजी के विचारानुसार वह (नरेशचंद्र) अपना दांपत्य जीवन सुखद बनाता है. प्रणयकी चरमसीमापर पहुँचनेके लिए उसने अपनी अधिकार भावनाको तिलांजलि दे दी है. अपनी पत्नीके मनको ठीक तरहसे जान लिया है और अपने को उसी तरह ढाल लिया है; रगड करनेकी उसने कोशिश नहीं की है. उसमें मोहिनीके अतीतके प्रति कोई ईर्ष्या परक जिज्ञासाका भाव नहीं है."[1] सुख और चैनमें जीनेवाले व्यक्तियोंमेंसे नरेशचंद्रजी हैं. काव्यमें उन्हें अधिक रुचि है. इसलिए सोफा-सेटपर बैठते-बैठते गीतकी धुन भी वे गुनगुनाने लगते हैं. पत्नीकी सुंदरताकी प्रशंसा करते-करते आत्मविभोर बनकर, भावनावश स्थितिमें काव्यमय शब्दोंमें अपने भावोंको व्यक्त करते हैं.

नरेशचंद्र हँसमुख स्वभावके पुरुष हैं. उदासी नाराजी उनमें कभी पैदा नहीं होती. तुच्छताका भाव उनके चेहरेपर कभी दिखायी नहीं देता. उदासी हटानेकी वे कोशिश करते हैं. घरका वातावरण आनंदसे युक्त और प्रसन्न रहनेके लिए वे हँसी-खुशीसे व्यवहार करते हैं. आत्मलीन और शांत स्वभावका व्यक्ति होनेके कारण वे हमेशा

---

१. हिंदीके मनोवैज्ञानिक उपन्यास - डा. धनराज मानधाने - प्रथम संस्करण जनवरी १९७१ पृ. १५३

अपने में ही मस्त रहते हैं.

नरेशचंद्रने जस्टीसका पद ठीक ढंगसे सँभाला है. पारिवारिक जीवनमें असंतोष, नाराजगी और उदासीका अनुभव वे नहीं करते. पत्नी भुवनमोहिनीका पूर्व-प्रेमी जितेन घरमें आनेपर उससे आत्मीयतासे व्यवहार करते हैं. बीमार पडनेपर जितेनकी शुश्रुषाके लिए अलगसे नर्स भी तैनात रखते हैं. " नरेश प्रकृतिसे उदार है. जितेनके यह बतानेपर कि वह तीन सालतक उसकी पत्नीका सहपाठी रहा है, नरेशके मनमें जितेनके प्रति कोई ईर्ष्यापरक जिज्ञासाका भाव नहीं है. वह जितेनकी समस्त सुविधाओंकी जिम्मेदारीका भार मोहिनीपर छोडकर स्वयं वहासे हट जाता है."[१] भुवनमोहिनीके पहले जीवनको जानने की उत्सुकता उनमें नहीं है. विलायतमें कुछ वर्ष रहनेके कारण उनके व्यक्तित्वमें विलायती ठाट-बाटको स्थान मिला है. यद्यपि भुवनमोहिनीसे नरेशचंद्र अति प्यार करते हैं, फिर भी उनके विचारोंपर यदि वह आक्षेप करती हो तो, उन्हें वह असह्य हो जाता है. भुवनमोहिनी के निर्देश आदेश कभी-कभी उन्हें पसंद नहीं आते.

" विवर्त " उपन्यासमें आये अनेक संकेतोंसे हमें यह पता चलता है कि नरेशचंद्र "श्रीकांत" (सुनीता) तथा "कांतस्वामी" (सुखदा) का ही प्रतिरूप रहे हैं. पत्नी भुवनमोहिनी जितेनकी सेवामें हर समय लगी रहती है. " वह मिस्टर सहय उर्फ जितेनमें अपने प्रतिद्वंद्वीको देखकर संतुष्ट है. रफीक की सेवा-सुश्रुषाका प्रबंध करके वह अपनी पत्नीकी एकांत-निष्ठा अर्जित करना चाहता है."[२] नरेशचंद्र

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन -डा.बलराज -सिंह राणा प्रथम संस्करण १९७८ पृ. १२९

२. उपन्यासकार जैनेंद्र मूल्यांकन और मूल्यांकन - डा.मनमोहन - सहगल प्रथम संस्करण जुलाई १९७६ पृ. १९२.

आदालतसे वापस आनेपर भी भुवनमोहिनी उन्हें जितेनके कमरेमें मिलती है. घंटो वहां बैठी रहती है फिर भी नरेशचंद्र दखल नहीं देते. इसीसे यह सिध्द हो जात है कि नरेशचंद्रकी प्रकृति और प्रवृत्ति औदार्यकी रही है. वे कमाते हैं, लेकिन उसका संभाल करनेके लिए सारा धन भुवनमोहिनीके पास लाकर पटकते है. घरमें चोरी होनेपर भी कष्टका अनुभव नहीं करते. संदिग्धताको अपने मनसे हटाना चाहते हैं. पत्नी भुवनमोहिनीको कष्ट न हो बल्कि हर समय उसे सबका प्रेम प्राप्त हो, यही उनकी राय है - " ध्यान आया अतिथिका, जो आया था और अब चला गया है. वह पहले प्रेमी था. लेकिन बादमें भी प्रेमी हो, निरंतर प्रेमी हो, तो मुझे उसमें क्या कहना है ? क्या मेरा आशीर्वाद है कि ऐसा हो ? हां है आशीर्वाद. मेरी मोहिनीको सबका प्रेम मिले, सबही का प्रेम मिले. क्या उसके मेरे होनेकी सार्थकता, तभी नहीं है कि अभिन्नता इतनी हो कि मेरा आरोप उसपर न आये ? यही है मोहिनी, यही है. देखोगी कि मेरी ओरसे तुमपर आरोप आनेकी आवश्यकता कहीं नहीं रह गयी है." [१] भुवनमोहिनीके हर मांगकी पूर्ति उनके द्वारा होती है. सोनेके विभिन्न आभूषणोंसे वे भुवनमोहिनीको सजाना चाहते हैं.

असलियतका स्वीकार और कल्पनाओंको तिलांजलि देना नरेशचंद्रका धर्म रहा है. अक्लके पैंतरे बाजीको घरमें स्थान देने के लिए वे तैयार नहीं है. अपने विचारोंके बारेमें वे कहते हैं - " मैं सही और सीधेका कायल हूँ. टेढ़े से चक्कर बनता है, बात नहीं बनती. शायद हम चक्करके शौकीन हैं. हो सकता है, खेलका वही मजा हो. पर साफ और सीधा भी कभी चाहिए." [२] भुवनमोहिनीसे वे कभी डाँट-डपट नहीं करते.

---

१. विवर्त - जैनेंद्रकुमार चतुर्थ संस्करण १९७८ - पृ. १२७

२. विवर्त - जैनेंद्रकुमार चतुर्थ संस्करण १९७८ - पृ. १२०

उसे संतुष्ट रखनेके लिए, सरकारी नौकर होकर भी रेल गिरानेवाले मिस्टर सहाय उर्फ जितेनको अपने घरमें आश्रय देते हैं.

नरेशचंद्रकी पत्नी भुवनमोहिनी पति और पूर्व-प्रेमीके बीच अपने पत्नीत्वकी प्रतिष्ठा कायम रखती है. पतिधर्मका पालन मोहिनीव्दारा सीधे ढंगसे हुआ है. यद्यपि उसने पतिको पूरा-पूरा पहचाना नहीं है, फिर भी नरेशचंद्रसे वह हमेशा बचती-सी रहती है. नरेशचंद्रके विचार उच्च और प्रगल्भ हैं. वे नियतिवादी हैं. जितेनका अपने घर आना मानो विधिकी इच्छा ही वे मानते है. पति-पत्नीके बीच वे अन्यकिसी भी प्रकारकी रुकावट नहीं चाहते. दांपत्य जीवनको सुखी बनानेके लिए वे अपने अधिकारोंको भी छोडनेके लिए तैयार हैं. परिणामतः मोहिनी " इस अपने पतिके प्रति हर कृतज्ञताको- वह ओछा पाती है, क्योंकी उनकी उदारताका ठिकाना नहीं है." [१]

भुवनमोहिनी नरेशचंद्रके सभी काम स्वयं करती है. उन्हें नौकरोंपर छोड नहीं सकती. पार्टियोंमें अपने पतिका साथ देती है. समय पानेपर दोनों पति-पत्नी विधायक,रचनात्मिक और उपयोगी चर्चामें अपना समय गँवाते हैं. नरेशचंद्र बाह रौब-दाबमें रहते हैं, डपटते हैं और हुकूमत भी चलाते हैं. व्यक्तित्वमें कसावट पाते हैं. और मानकी रक्षाके लिए चेष्ठाएँ भी करते हैं. लेकिन घरमें आकर अनहुए होकर सार्थकताका अनुभव करते हैं." वैसे मोहिनीसे डर भी रहता है. पर बेझटके उसके आगे पैर फैलाकर उसके आगे पैर फैलाकर उसकी टांगपर या कुर्सीकी गद्दीपर रख देनेमें उन्हें सोचना नहीं पडता कि लो, खोलो तस्मे, और जूते उतारकर अपनीजगह रख दो. मोहिनीकी एक भ्रू-भंगपर कांप जाते हैं और उसकी किसी भी बातको

---

१. विवर्त जैनेंद्रकुमार चतुर्थ संस्करण १९७८ - पृ. १९१

किसी भी समय एकदम रद्द भी कर देते हैं."[१] रहस्यके अंध:कारकी अपेक्षा प्रकाशका अपार संतोष, सुख और आनंदका अनुभव नरेशचंद्र कर रहे हैं. नरेशचंद्र जीवनके खिलाडी हैं. उन्हें दु:खकी अपेक्षा सुखकी अनुभूति प्राप्त हुयी है.

**" व्यतीत " उपन्यासके पति-पात्र :**

१. जयंत -

बी.ए. में पोजीशन लेकर जब जयंत पास हुये थे तभी घरके सभी सदस्य खुश हुये थे. इस अवसरपर अनिता, जिससे अनजाने ही जयंतका मधुर लगाव प्रस्थापित हुआ था, आती है और एकांत खोजकर फुलोंकी माला उन्हें पहनाती है. जयंत फुले नहीं समाते, लेकिन अनिताकी सगाईकी खबर सुनकर वे अप्रसन्न हो जाते हैं. अनिता अपनी जिंदगीसे छूट रही है, यह बात सुनकर वे मनही मन निराश बन जाते है. सामाजिक स्तरपर ऊँचा उठनेकी चाह उनमेंसे समाप्त हो जाती है.

जैनेंद्रजीके अन्य पात्रोंके समान जयंत आत्मपीडामें जीनेवाले व्यक्ति हैं. निबंधकी प्रतियोगितामें मिले २५१ रुपयोंकी सोनेकी चेन खरीदते हैं. और अनजानमेंही अनिताको पहनाते हैं. वही चेन उससे वापस मिलनेपर उनके मनमें " रुग्ण आसक्ति " निर्माण होती है. अनिता के प्रति जयंतकी यह रुग्ण-आसक्ति उनके जीवनको अशांत, पलायनवादी, कठोर और जटिल बना देती हैं. " जयंतके मनमें अंतर्द्वन्द्व रहा है. प्रारंभमें उसकी प्रकृति बहिर्मुखी थी. वह जीवनके प्रति सजग था. लेकिन प्रेममें असफल हो जानेपर वह अंतर्मुख बन जाता हैं. वह जीवन और जगतके विषयमें चिंतन करता है. सांसारिक दृष्टिसे वह असामान्य है. जयंत के परिवर्तित स्वभावसे सभी चिंतित हैं. सगे संबंधी सफलताके लिए प्रेरणा देते अ हैं. लेकिन उसकी आंतरिक उलझनको कोई नहीं समझाता है."[२]

---

१. विवर्त जैनेंद्रकुमार चतुर्थ संस्करण १९७८ पृ. ६३

२. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन डा. बलराजसिंह रा

मनकी अति भावुकताके कारण जयंत अपना घर छोडकर चले जाते हैं. और सहसंपादक बनकर ७५ रुपयोंपर काम करने लगते हैं. अनिताका विवाह मि. पुरीसे हो जानेपर उसे भुलनेका वे प्रयास करते हैं.

सील और दुर्गंधसे युक्त कमरेमें रहते हुये वे एक दिन देखते हैं कि अच्छे खासे परिधानमें अनिता उनके कमरेमें आयी है. कुछ क्षणोंतक वे विश्वास भी नहीं करते. दूसरे दिन मि. पुरीके साथ अनिता ऑफिसमें आनेपर वे अप्रसन्नताका अनुभव करते हैं. जयंत विचित्र जीव हैं, कविता करते हैं. कल्पना जगतमें रहते हैं और अति-भावुक बन गये हैं. अनिताव्दारा जो भी प्रस्ताव सामने आता है ; उसको वे अस्वीकार करते हैं. उनकी प्रवृत्ति शुरूसेही स्वावलंबी होनेके कारण दूसरोंपर आश्रित रहनेके लिए वे तैयार नहीं होते. पिताजीकी मृत्युके बाद मिला ढाई हजार रुपिया वे बड़ी बहनको देते हैं. विपरीत परिस्थितिमें अनिता उनकी मदद करती हैं ; लेकिन स्वतंत्रताकी प्रवृत्ति अधिक बलिष्ठ हो जानेसे और स्वाभिमानको ठेंस पहुँचनेसे वे दूबारा नौकरीपर हाजिर होते हैं.

जयंतके जीवनमें आनेवाली दूसरी स्त्री सुमिता है. सह संपादकके रूपमें जिस ऑफिसमें जयंत काम कर रहे हैं ; वहाके मालिककी पुत्री सुमिता है. उसे पढानेका काम मालिक जयंतपर सौंप देते हैं. लेकिन जिस उद्देशसे मालिकने सुमिताको जयंतके पास लाया था, वह पूरा नहीं होता. वे सुमितामें दिलचस्पी नहीं दिखाते और उसकी ज्यादतीपर भी उसका स्वीकार नहीं करते. जयंत संपादककी सहायता भी अस्वीकृत करते हैं. सुमिताके घर आते-जाते जयंतका परिचय बुधियासे हो जाता आत्मपीडामें जीनेवाला यह पात्र बुधियाका जीवन उजागर करनेके लिए बुधियाके परिवारकी सहायता करता है. बल्कि जयंत अपना प्रेम न सुमिताको दे पाते हैं ना न बुधियाको. बुधियाको पढानेका काम भी

जयंत करते हैं. उसके पिताजी कलुआ मजदूरको सही मार्गपर लाते हैं.

आत्मपीडाकी भावनासे प्रेरित होकर जयंत फौज में भरती होना चाहते हैं. आंतरिक पीडासे मुक्ति पानेके लिए वे कश्मीर चले जाते हैं; जहां उनका परिचय चंद्रीसे हो जाता है. मित्र कुमारके कहनेपर और उसकी पत्नी व उदिताको सुख पहूँचानेके लिए जयंत चंद्रीसे विवाह करता है. यह विवाह अनिताको पसंद नहीं है. बल्कि जयंत किसीका भी कहना नहीं मान सकता, यह जानकर अनिता चुप होती है.

विवाहोपरांत सुहागरात मनानेके लिए चंद्री और जयंत कश्मीर पहूँचते हैं. उल्लास और उमंगके वातावरणमें चंद्री खिल उठी है. लेकिन अनिताके प्रेमकी टीस जयंतको चंद्रीके निकट नहीं आने देती. चंद्री राततक डेरेमें सोयी रहती है और ये कवि महाशय कश्मीर की बिखरी हुयी चंद्र रश्मियोंके नीचे आरामसे कविता लिखते रहते हैं. आधी रातके समय वापस आनेपर चंद्रीकी फटकार उन्हें सुनने मिलती है. " तो कश्मीर हमारा बीत गया, क्यों जयंत ? ...बडी खुशी-खुशी बीता ! .... एक बात पूछ सकती हूँ ? ....कवि हो, तुम्हें आकाशकी चंद्रिमा चाहिए .... फिर ब्याह क्यों किया था तुमने इस धरतीकी चंद्रीसे?" [१] कश्मीरसे वापस आते वक्त चंद्री अप्रसन्नताका अनुभव नहीं करती. निराश भी नहीं होती. घर आनेपर अनिता और जयंतको बेडरूममें छोडकर चंद्री चौकेमें सोती है. रातके समय अनिता इसपर विस्मय प्रकट करती है, तब जयंत उसे बताते हैं कि वे अनिताको छोडकर सभी नारियोंके सामने बर्फसेही रहते हैं. प्रेममें असफलता पानेके कारण जयंत चंद्रीको जलाकर समाधान प्राप्त कर रहे हैं. जिससे " चंद्रीका पत्नीत्व व्यथामय और दयनीय हो उठा है. इस स्वाभिमानी स्त्री को आखिर इस हिमशीतल पौरुषत्वके सामने हार खानी पडती है

---

१. व्यतीत - जैनेंद्रकुमार चतुर्थ संस्करण १९७८ पृ. ७६

और उसे सदाके लिए छोडकर दूसरेके साथ विवाह बध्द होती है."[1]

दूसरोंको दुःख और कष्ट देनेके बदले वीरताका प्रदर्शन करने के लिए जयंत युध्दपर चले जाते हैं. जिससे उनके मनमें शांति पैदा होती है. युध्दमें वीरता प्रदर्शित करते हैं. घायल होनेपर उन्हें अस्पतालमें लाया जाता है. वहासे बाहर आनेपर वे मिसेस कपिल और श्रीमती नीला बघावरके संपर्क में आते हैं. अनेक स्त्रियोंके साथ संपर्क आनेपर भी उनकी कुंठाकी भावना जैसी-की-वैसी ही रहती है. इस समस्याका समाधान जैनेंद्रजीने अनिताके आत्म-समर्पणामें खोजा है. अनिता शायद मानती है कि जयंत उसकी देहको भोगना चाहता है; अतः वह लाज-मर्यादाका त्याग करके जयंतको आव्हान करती है. - " जयंत रातकी बात भूल जाना. मैं सुधमें न थी. अब सुधमें हूँ. मैं यह सामने हूँ. मुझको तुम ले सकते हो. स्त्री सदा यह नहीं कहती.... जयंत क्यों डरते हो ? ....कामनाका दंश भी मुझे इस समय नहीं है. इसीसे कहती हूँ. अपने पुरुषत्वको चुराकर तुम मुझसे जा नहीं सकोगे...."[2] अनिताव्दारा ये शब्द सुनकर जयंत अचंभेमें आ जाते हैं. अनिताको रेलसे विदा करते समय वे गैरिक वस्त्र परिधान करनेका संकल्प करते हैं.

गैरिक वस्त्र परिधान करनेके उपरांत जयंतकी जिंदगी घुमक्कडकी बन जाती हैं. इस वेषमें वे परिव्राजक माने जाते हैं. प्रकृतिसे कवि होनेसे वे गीत रचकर गाते रहते हैं. जयंतके मित्र कुमारकी पत्नी उदिताकी मृत्यु हो जानेपर चंद्रीने कुमारसे विवाह किया है. जैनेंद्रके उपन्यासोंमें

---

१. हिंदी उपन्यासोंमें नारीका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण -डा. विमल -सहस्रबुध्दे संस्करण मार्च १९७४ पृ. २६२

२. व्यतीत - जैनेंद्रकुमार चतुर्थ संस्करण १९७८ पृ. १०८-१०९

यह प्रथम स्त्री है जो पतिके मित्रके साथ विवाह करती है.

जयंतका संबंध जिंदगीमें अनेक स्त्रियोंसे आया है. चंद्री और सुमिता तो उससे प्यार करती हैं. लेकिन जयंत उनके प्रति बर्फसा रहता है. जयंतकी अनिताके प्रति रुग्ण-आसक्ति हो जानेसे और अनिताका आत्मसमर्पण तथा उसके देह दानकी तत्परता सहज एवं नैसर्गिक न होकर इच्छित होनेसे जयंत उसे समूची लेनेकी अपेक्षा गैरिक वस्त्रोंको स्वीकृत करता है. जीवनकी उदासीनता मनमें रहनेसे जयंतने समूची जिंदगी बरबाद की है. उनकी आर्थिक अच्छी न रहनेपर भी दूसरोंकी सहायता उन्होंने कभी नहीं ली. धर्म और भाग्यपर उनका भरोसा रहनेसे वे पुनर्जन्ममें विश्वास रखते हैं.

२. संपादक महोदय :-

समाचार पत्रके संपादक महोदय स्वयं अपने पत्रके मालिक हैं. घरसे भागकर निकले हुये जयंत इनके पत्रमें सह-संपादकका कार्य करने लगते हैं. संपादक महोदय धनी व्यक्ति हैं. घरमें कार एवं नौकरचाकर हैं. इनके परिवारकी व्याप्ति बहुतकी अनूठे ढंगकी है. जयंत लिखते हैं, कि- " वहां परिवारके बीच चायपर बैठना हुआ. परिचय में जब कहा कि मै अमुकका पुत्र हूँ, तो मैं अचंभेमें हो आया कि इन्हें मेरे पिताका पता कैसे हुआ. परिवारमें उनकी पत्नी बडी कन्या सुमिता मैडीकलमें थी और दो उससे छोटे भाई-बहन थे."[१] संपादक महोदय घरके सदस्योंको स्वतंत्रतासे रहने देते हैं. जयंतके व्यक्तित्वसे वे प्रभावित हैं.

सुमिताके साथ विवाह करनेके लिए संपादक महोदय जयंतको सुमित्राके निकट लाते हैं. सुमिताको पढानेके लिए जयंतको बाध्य करते हैं.

---

१. व्यतीत - जैनेंद्रकुमार चतुर्थ संस्करण १९७८ - पृ. २२

जयंतके साथ वे आत्मीयतापूर्ण व्यवहार करते हैं. अपने समाचारपत्रमें उसे साझीदार बनाना चाहता हैं. आत्मीयतापूर्ण व्यवहारासे दूसरोंको आकृष्ठ करनेकी अपूर्व क्षमता संपादकमें है. यह उनकी क्षमता उनकी व्यावसायिक बुध्दिका दयोतक है. जयंतने अकस्मात त्यागपत्र देनेपर उनकी समूची आशापर ही पानी फिर जाता है. वे जयंतसे कहते हैं- " तुम्हारे इस पथसे जयंत, क्या समझूँ, बताओ तो ? तुम्हारे, लिये मैंने दूसरी जगह ठीक की है, और मैं तुम्हें छोडना नहीं चाहता... दूसरी बात यह हैकि तुम तो बिरादरीके हो. सुमिताको जान गये हो. बताओ, किसको लिखकर ठीक करना होगा ?"[1] जयंतकी ओरसे सुमिताके बारेमें - असफलता पाकर संपादक महोदय सुमिताका विवाह अन्यत्र करते हैं.

३. मि. पुरी :-

"व्यतीत" उपन्यासकी नायिका अनिताके पति मि.पुरी हैं. लेकिन उपन्यासके गौण पात्रोंमें इनका समावेश हो जाता है. इनका निजी अस्तित्व अनिताके सामने फीका-फीकासा लगता है. अनिताका विवाह मि.पुरी से हो जानेपर जयंत उदासी और निराशाका अनुभव करने लगता है. अनिता और जयंतका घनिष्ट संबंध मि. पुरीको ज्ञात है. उनकी पत्नी अनिता का व्यक्तित्व वैशिष्टयपूर्ण है. " रुढि उसमें है. पतिके प्रति वह विरक्त नहीं हो सकती. उसके लिए उसमें अत्यधिक श्रध्दा है. ....वह प्रणयीको अपना शरीर देनेके लिए तैयार है किंतु पतिकी आज्ञासे नहीं - स्वेच्छासे. लेकिन एक बार ऐसी अनिताको परंपरासे प्राप्त संस्कार उन्नत भी बना देते हैं और वह अपने सतीत्वकी रक्षाके लिए जयंत को दुष्ट और नराधम ठहराती है".[2]

---

१. व्यतीत - जैनेंद्रकुमार चतुर्थ संस्करण १९७८ पृ. ३२

२. हिंदी उपन्यासोंमें नारी - डा. शैली रस्तोगी प्रथम संस्करण - १९७७ पृ. १४०.

अनिताके प्रति मि. पुरीके मनमें प्रेम रहा है. उसकी हर एक मांगको पूरी करनेके लिए वे तत्पर रहते हैं. अनिताव्दारा कहनेपर वे जयंत की भी सहायता करते हैं.

मि. पुरी एक सफल व्यवसायी ह रहे हैं. घुमक्कडकी जिंदगी उनके सामने रही है. अनिताके उच्छृंखल व्यवहारपर मानो वे नियंत्रण रख रहे हैं. अपने पैसोंसे वे जयंतका विवाह चंद्रीसे कर देते हैं. लेकिन उनकी दृष्टि सर्वत्र उदार और निःसंशय नहीं रही हैं. " घरमें मि. पुरी अनितापर शायद शासन भी रखते हों, क्योंकि उसने घर टूटने, ज्वालामुखीपर बैठी होने आदिके संकेत देते हुये जयंतसे कहा है कि उसका घर बस जाय तो वह भी अपनी गृहस्थी सुखपूर्वक संभाल सकेगी." उपन्यासमें- मि. पुरीका व्यवहार उदात्तीकृत पतिके रूपमें आया है. उनकी निगाह व्यापक और विस्तृत है. धनकी उन्हें कमी नहीं है. सदाचार, सरलता और सादगीमें वे रहते हैं. अनिताकी नाराजगी देखनेके वे अभ्यासी नहीं है, अतः उसे कुछ सीमातक स्वतंत्रतासे व्यवहार करनेकी इजाजत देते हैं.

४. कुमार :-

पाश्चात्य विचारधाराका असर और स्वच्छंदताके रंगमें, भीगा हुआ पात्र कुमार है. किसीके सामने वह नम्र नहीं होता. सीधे बढकर सफलताको प्राप्त करनेकी उसकी प्रवृत्ति रही है. कामयाब होनेवाले लोगोंमें कुमारका समावेश होता है. वह जयंतका मित्र है. कश्मीरमें कुमारकी भेंट जयंतसे होती है. उदिता पत्नीका साथ होकर भी वह चंद्रीकी ओर आकृष्ठ हुआ है. रसिक प्रवृत्तिका वह युवक

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्र - मूल्यांकन और मूल्यांकन -डा.मनमोहन
- सहगल प्रथम संस्करण जुलाई १९७६-पृ.२१२

रहनेसे जयंतके सामने सहायताकी अपेक्षा करता है. चंद्री और उदिता दोनोंको भी वह खुश रखना चाहता है. उसके साथ चंद्री भी विलायत आ रही है, यह उदिताको अच्छा नहीं लगता. इसलिए कुमार " जयंतको चंद्रीके साथ रोमांस करनेके लिए प्रोत्साहित करता है. कुमार जयंतके सामने चंद्रीकी सुंदरता और उसके धन वैभवकी भरपूर प्रशंसा करता है."[१] दूसरोंकी पीडाको दूर करनेकी प्रवृत्ति जयंतमें रहनेसे वे कुमारके लिए चंद्रीसे विवाह करनेके लिए तैयार होते हैं.

कुमारके द्वारा जैनेंद्रजीने भाभीवादपर तीखा प्रहार किया है. क्योंकि आधुनिक विचारोंका असर कुमारपर रहनेसे जयंतने गैरिक वस्त्र परिधान करनेके उपरांत, अकस्मात् दो दिनोंमेंही उदिताकी मृत्यु होती है और कुमार चंद्रीसे विवाह करता है. कुमारकी उपस्थितिसे " व्यतीत" उपन्यासके कथानकमें गति आयी है. विवाह होकर भी अन्य युवतियोंके प्रति कुमारमें आकर्षण रहा है. उसकी प्रवृत्ति धूर्त रही है.

## " जयवर्धन " उपन्यासके पति पात्र :

### १. जयवर्धन -

"जयवर्धन " उपन्यासका प्रधान पात्र जयवर्धन हैं. वे राष्ट्राधिपति हैं. सुस्पष्ट विचार, कल्पनाओंकी अजीब उडानके बदले व्यावहारिकता और भौतिकतापर विश्वास, सादगी, सरलता ये आपके गुण रहे हैं. राज्यका शीर्षस्थ व्यक्ति और जगत् विख्यात प्रतिष्ठा आदिके कारण प्रख्यात अमरिकन पत्रकार मि. हूस्टन उनकी राजनैतिक गतिविधियोंका अध्ययन करनेके लिए आये हैं. यथा नाम तथा गुणाको साकार करनेकी क्षमता जयवर्धन के व्यक्तित्वमें है. विरोधी दलके नेता आचार्यकी पुत्री इलाने उनका साथ दिया है. अविवाहित होकर भी जयवर्धनके साथ वह रहती है. इसपर स्वामी चिदानंद रूष्ट हैं. इला

१- उपन्यासकार जैनेन्द्र पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डा. [illegible] पृ. १७२

[redacted]

किसीके भी भरोसेपर जयवर्धनको छोडना नहीं चाहती. आचार्य जयवर्धनको बडा धनी और बडा गुनी आदमी मानते है. इला उनके संबंधमें कहती है - " मैंने मालूम किया कि कौन हैं, कहां के हैं, तो ठीक पता नहीं चला. सुना कि एकदम अनाथ हैं. फिर तरह तरहकी कहानियाँ सुनी कि यह हुआ और यह किया. जाने क्या-क्या पराक्रमकी बातें थी. मुझे वे अजीब लगी क्यों कि जब खाटपर चने फांकते देखती और ऐसा कि मेरा हर हुक्म माननेको तैयार हैं तो मुझे बडा अजब लगता." [१] परिस्थितियोंसे जूझते हुये जयवर्धन स्वकर्तृत्वके बलपर राज्यका अधिपति बनी हैं. वे बेहद दर्पी और अपनी आनपर रहनेवाले आदमी हैं.

अथक परिश्रमद्दारा राज्यके विकासके लिए जयवर्धन अपनी समूची जिंदगी न्यौछावर कर रहे रहे हैं. स्वामी चिदानंद उनके विरोधियोंमेंसे एक हैं. जिनके यहां राष्ट्रमें उत्पात मचानेके लिए चर्चाएँ होती हैं. लेकिन स्वामीके प्रति जयवर्धनके मनमें रोष अथवा घृणाका भाव नहीं है. भारतीय संस्कृति और राजनीतिमें वे ऋषिका स्थान सर्वश्रेष्ठ मानते हैं. " निश्चय ही प्रतिष्ठा मैं गिरा नहीं सकता. स्वयं वह ही उसे गिरा सकते हैं. तो भी चिदानंद गिरेंगे, ऋषिका स्थान नहीं गिरेगा." [२] जयवर्धनका चरित्र निष्कलंक रहा है और उसकी रक्षा उन्होंने अंततक की है.

जयवर्धन सच्चे राजनीतिज्ञ रहे हैं. इला और जयवर्धनके चरित्र पर लांछन लगाये जाते हैं. स्वामीकी बातोंमें जनता भी विश्वास करती है कि बीस सालसे अधिक ये दोनों एक साथ रहनेपर कैसे कलंक विरहित रह सकते हैं ? इसके बारेमें कहती हुयी इला

---

१. जयवर्धन - जैनेंद्रकुमार द्दितीय संस्करण १९६५ पृ. १३८

२. जयवर्धन - जैनेंद्रकुमार द्दितीय संस्करण १९६५ पृ. ११६

मि. हूस्टनसे कहती है कि- " मै हूँ और वह, कोई पास नहीं है. और कहते हैं, " अब भजन". हर सबेरे, हर शाम. यही कि " अब भजन" दिनमें देखती हूँ,समय नहीं मिलता. पर इस समय न मिलनेको देखती तो हूँ ही. राज दूर रहते हैं, मैं दूर ह रहती हूँ. "[१] जयवर्धनके प्रत्येक कार्यव्यापारमें इला हमेशा साथ देती है. मानो वह उनकी निजी सचिवही नहीं उनके जीवनका एक अंगही बन गयी हो.

पदपर रहकर भी पदके प्रति आसक्ति जयवर्धनके मनमें नहीं है. वे निर्मोही हैं. जयवर्धनके व्यक्तित्वके निर्माणके पीछे जिसतरह इला काम कर रही है, उसी तरह उनकी रक्षाभार उनके मित्र इंद्रमोहन पर भी रहा है. वह निरंतर अपनी गुप्त-संस्थाव्दारा सभी घटनाओंपर नियंत्रण रखता है. जयवर्धनकी राजनीतिके प्रति सभी विरोधी दलों-व्दारा असंतोषकी ज्वालाएँ धधकती जा रही हैं, लेकिन यह व्यावहारिक और मिलनसार नेता जनतामें अपने व्यक्तित्वकी साख बनाये रखता है. गांधीवादी विचारोंमें वे रहते हैं. असंतोषका बदला रक्तसे न लेकर वे शांतिसे लेते हैं. न्यायप्रिय शासक रहनेसे न्यायकी उचित व्यवस्थाके लिए वह कार्यरत हैं. अध्यात्मिकताके बिना जीवनमें शांति नहीं हो सकती अतः आचार्य के लिए वे शिवधामकी आयोजना करते हैं. " जयमें - गंभीर त्यागभावना,आत्मसंयमपर विश्वास एवं प्रभु आश्रयके महान गुण देखे जा सकते हैं. ये गुण किसी राजनीतिक कूटनीतिज्ञमें होना संभव नहीं. वह शासक होनेके साथ मनुष्य भी है. इसीलिए उसमें मानवोचित कारुण्य,द्रवण,प्यार और दूसरेके लिए त्याग कर सकनेका सामर्थ्य मौजूद है. "[२]

---

१. जयवर्धन - जैनेंद्रकुमार व्दितीय संस्करण १९६५ पृ. १३३

२. उपन्यासकार जैनेंद्र - मूल्यांकन और मूल्यांकन -डा.मनमोहन सहगल - प्रथम संस्करण जुलाई १९७६ पृ. २२५

जयवर्धनका जीवन व्यक्तिनिष्ठ रहा है. रोजनितिज्ञ प्राय: संदेहशील रहता है. बल्कि जयवर्धन के मनमें कहींपर भी संदेह नहीं हैं. अन्योंके साथ उनके विचार स्पष्ट रहते हैं. उनकी कर्मठता, मस्ती और देश कल्याणके प्रति इला आकृष्ठ हुयी हैं. जयके लिए उसने अपने पिता को भी छोडा हैं. वह अविवाहिता प्रेमिका रही है और उसने जयपर अपनेको समर्पित किया है." इला एक ऐसी नारी है जो जन्म कही लेती हैं, पाली कहीं जाती हैं, पहला प्रेम या पहला गुनाह किसीसे करती है और रहती किसी और के साथ हैं - मतलब यह हैं कीं, जयवर्धन के साथ. " [१] लेकिन जयवर्धन उसे अपना नहीं सकते और बलात् अपना लेनेका साहस भी उनके पास नहीं हैं. जब विरोधी दल अधिक प्रखरतापर ज़ोर देते हैं तभी शिवधाममें सर्व दलीय सभा जयवर्धन आयोजित करते हैं. आचार्यपर सभी कार्यभार सौंपकर इलासे शादी भी करते हैं." एक साथ क्या हुआ मेरे पीछे शिवधाममें?

----- निश्चय हैं कि अगले दिन १३ ता. प्रात:, जय और इलाका विवाह हुआ. आचार्य थे, स्वामी थे और आश्रमके कुछ लोग थे. " [२] जिस स्त्रीने आजीवन प्रेमकी आवश्यकताको और उसकी पूर्तिके लिए राह देखी, वहि जयवर्धनकी सहयोगिनी उनकी सहधर्मिणी बनी. जयने समझा था कि जनताका विरोध प्रखर हो रहा हैं और सर्वदलीय मंत्रिमंडलकी आवश्यकता है, तभी जयवर्धनने यही कार्य किया. मि. नाथ, स्वामी और आचार्य जयवर्धनको ही राष्ट्रनेताके रूपमें चुननेके लिए तैयार थे. लेकिन प्रकृतिव्दारा परिचालित विधानोंपर उनका विश्वास होनेके कारण राजपदसे उन्होंने

---

* ~~उपन्यासकार जैनेंद्र~~ :-

१) हिंदी उपन्यासोंमे नारी - डॉ. शैल रस्तोगी प्रथम संस्करण १९७७ पृ. १४०

२) जयवर्धन - जैनेंद्रकुमार व्दितीय संस्करण १९६५ पृ. ४३९

अपने आपको अलग किया हैं. डॉ. बलराजसिहं राणा लिखते हैं कि- " जयवर्धन राजनेता होकर भी सहज है, सरल हैं. भावुक प्रकृतिका जयवधन बहिर्मुखी न होकर अंतर्मुखी हैं. .:.. उसने अपने व्यक्तीगत जीवनको सामाजिक जीवनपर निछावर कर रखा हैं. अंतमें अपने आदर्श और सौजन्यके कारण वह राजनितीसे पलायन कर जाता हैं और तब व्यक्तीगत जीवनकी सुध लेता हैं." [१]

---

## २. मि. नाथ

" प्रगतीदल " के नेता मि. नाथ तत्कालीन भारतीय राजनीतिमें विशेष स्थान रखते हैं. वे जयवर्धनके शासनका विरोध करते हैं. उनका दल नित्य कार्यरत रहता हैं. विरोधी दलका नेतृत्व करनेके लिए मि. नाथको उनकी पत्नी एलिजाबेथ उनका साथ दे रही हैं. जो उपन्यासमें " लिजा नामसे पहचानी जाती है. मि. नाथ आधुनिक विचारधाराओं समर्थन करते हैं. पाश्चात्य विचारधाराके भी वे प्रबल समर्थक हैं. विदेशी महिला एलिजाबैथसे उन्होंने विवाह किया हैं. " विदेशी स्त्री होनेके नाते उसके नैतिकताके मान और मूल्य इलाकी दृष्टीमें पतनोन्मुखी हैं. वह आवश्यकता पडनेपर नारीत्वके समर्पणसे भी काम निकाल सकती हैं. पुरुषको डिगानेमें उसे रस मिलता हैं. इसाली जयकी अडिगतापर उसे खीझ होती हैं, जिसे कभी वह अपने पति नाथ और कभी इलापर निकालती हैं. " [२] मिसेस नाथका प्रभाव मि.नाथपर अधिक रहा हैं. अनेक बार लिजाके विचारोंको मि. नाथको मानना पडता है. वे प्रगत विचारोंके वाहक हैं.

मि. नाथका दल विकास कर रहा हैं. उनके संबंध भी यहा

---

१) उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन डॉ.बलराजसिंह राणा प्रथम संस्करण १९७८ पृ. १३३

२) उपन्यासकार जैनेंद्र :,, मूल्यांकन और मूल्यांकन डॉ. मनमोहन सहगल प्रथम संस्करण जुलाई १९७६ पृ. २३८.

---

वहां बहुत फैले हैं और वे जयवर्धनके लिए प्रबल शत्रु भी बन सकते हैं. मि.नाथ बार बार अपने दलके साथ विचार विमर्श करते हैं, और संगठनके लिए निरंतर कार्यरत रहते हैं. विदेशी महिला होनेके कारण मिसेस् नाथके मनमें विवाह संस्थाके प्रति गहरा असंतोष रहा हैं. अपने प्रेमको वह विवाह से बध्द करना नहीं चाहती. अपने पति नाथसे उसका विरोध रहा हैं और वह जयवर्धनसे प्रेम करता हैं. यद्यपि लिजाकी बातोंका स्वीकार मि. नाथ करते हैं, फिर भी समय आनेपर लिजाको वे फटकारते भी हैं. शिवधाममें पहली बार सभा भंग हो जानेपर वे अपना क्रोध पत्नीपर उतारते हैं. वे साहसी, निर्भीक और निडर आदमी हैं. स्वच्छंद प्रवृत्ती रहनेसे वे बार बार पत्नीसे मतभेद रखते हैं.

पत्नी लिजापर मि. नाथ अपनी ओर से कुछ रोक टोक नहीं लगाते. लिजा विदेशी होकर साडी पहनती हैं. बल्कि भारतीय आचारोंमें वह रह नहीं सकती. हूस्टन, जयवर्धन आदिसे वह स्वतंत्रतासे व्यवहार करती हैं. मि. नाथ हूस्टनका आदर करते हैं और जयवर्धन को निस्पृह, कल्पनाशील और शक्तीशाली पुरूष मानते हैं. धर्म बनाम मुक्ति, रूढि बनाम प्रगती और किताब बनाम इन्सानियत की प्रस्थापनाके लिए मि.नाथ कार्यरत रहे हैं.

---

## " मुक्तिबोध " उपन्यासके पति पात्र

### (१) सहायबाबू

जबसे भारतकी शासकीय व्यवस्था कार्यान्वित हुयी, तबसे संसद - सदस्य और राजकीय नेताके रूपमें सहायबाबू एक ऊँचे ओहदेपर रहे हैं. कर्मठता उनके व्यक्तित्वका प्रधान गुण हैं, पंद्रह वर्षतक वे मिनिस्टर रहे हैं. दुविधा-xxx रहित उनके जीवनमें अचानक मोड आ जाता हैं. कामराज योजनासे

प्रभावित होनेके कारण पदपर रहूँ या न रहूँ, इस दुविधाकी स्थितिमें वे फँस जाते हैं. मनोवैज्ञानिक अध्ययनकी प्रक्र पध्दतियोंके अनुसार लेखकने सहायका सूक्ष्म चित्रण किया हैं. जब वे ओहदेके प्रति अनासक्तिका स्वर पत्नीके सामने व्यक्त करते हैं. और धीरे धीरे यह जानकारी सभी लोगोंको ज्ञात हो जाता है, तभी पत्नी, पुत्री, राजनितिक स्तरके मित्र, ठाकूर महादेवसिंह भानुप्रताप, दामाद कुंवर, पुत्र विरेश्वर और पूर्व प्रेमिका नीलिमा सभी उन्हें सुझाव देनेके प्रयास करते हैं. इसी समय सहायका "अहं" अभिव्यक्त होता हैं. अधिक " महत्ता " का अर्जन करनेके लिए वे " सेवा " का बहाना लेते हैं. एक सस्ते और आकर्षक माध्यमकी ओर अग्रसर होते हैं. वे जानते हैं कि लोग अवश्य पदका स्वीकार करानेके लिए बार बार कहेंगे. इससे महत्व बढताही रहेगत पुत्र विरेश्वर इसपर टिप्पणी करता हुआ कहता हैं- " - लेकिन इनका यह ढोंग है कि पद नहीं चाहिए. पदके लिए तो सारा त्याग तपस्याका यह रूप हैं. ऊपरी जो है, वह नखरा हैं. इसलिए हैं कि आग्रह अनुरोध और हो, और यह जाहिर कर सकें कि पदने नहीं बल्कि इन्होंने पदपर कृपा की है. "[१]

अपने अहं के कारणही आजतक उन्होंने न अपनी पत्नी राजश्रीके बारेमें चिंता की है, न उसके कष्टोंके बारेमें सोचा है. राजश्री उनकी निरी अनुगता बनी हैं. नीलिमाके सामने सहायका अहं पराजित होता है. सहायका अहं नीलिमाकी उदारता, उदात्तता, स्वातंत्र्य और आत्मविश्वासके सम्मुख हथियार डाल देता हैं. अकस्मात् कठोरतासे ऐंठी हुयी गर्दनमें स्पंदन होता है और सहाय पत्नी राजश्रीको अपने मंत्री बन जानेकी सूचना देते हैं.

---

१) मुक्तिबोध - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७८ पृ. १११

---

समूचे उपन्यासमें सहायका हृदय भीषण कोलाहल और अंतर्द्वद्वसे भरा हैं. निश्चित विचारोंतकने पहुँच नहीं पाते. कामराज योजनाके बारेमें दृढ निर्णय वे नहीं ले सकते. उनका तन कमजोरीके कारण भावुक बन जाता है और वर्तमान जीवन संघर्षसे मुक्ति प्राप्त करनेके लिए वे अपना शेष जीवन भगवानका स्मरण करनेमें बीताना चाहते हैं- " यह सब जो है वह अपना नहीं था, अपना हीं हैं. बेटा- बेटी दुनियामें अपनी तरह जियेंगे. जमाई लोग अपने बूते बढेंगे. मैं सीढी नहीं हूँ कि पैर रखकर मुझपर चढा जाय. कुछ तो सोचो. चौव्वन बरसकी उमर हो गई है, क्या अब भी मुझे भगवानका सुमरन नहीं करने दोगी? "[१] जिंदगीके अंतिम दिनोंमें वे भगवानका स्मरण करना चाहते हैं. सहायकी ये बातें सुनकर राजश्री विस्मय प्रकट करती हैं. त्यागवृत्ती और सेवाकी भावनासे पंद्रह वर्षतक सहायने काम किया हैं. प्रभावशाली राजकीय नेता होकर भी आपने पदका उपयोग स्वार्थके लिए नहीं किया. धन, संपदाका संग्रह उन्होंने नहीं किया हैं, राजश्रीके लिए जेवर भी नहीं बनाये हैं.

सहायबाबूके विचारोंमे दार्शनिकता हैं. निलिमा उनकी प्रेयसी हैं. प्रतिकूल परिस्थितिके कारण उनका यह प्रणय विवाहमें परिणत नहीं हो सका हैं. सूरजकुंडपर नीलाके सामने नाराजगी व्यक्त करते हैं, लेकिन बादमें वे उसकी माफी मांगते हैं. नीला और सहायका मधूर संबंध राजश्री जानती हैं. अतः सहायके मनमें स्थित देवत्वको जगानेके लिए राजश्री सहायको नीलाके पास भेज देती हैं. कर्तव्यप्रियता उनके व्यक्तित्वका प्रधान गुण हैं. इसलिए वे पुत्री अंजलिको फटकारते हैं. सहायका अपने पद एवं अन्य सामाजिक उत्तर दायित्वोंसे उदासीन होना, परोक्ष रूपसे उनके प्रति उनका आसक्त होनाही हैं. पारिवारिक झंझटोंसे सहाय उदास नहीं बने हैं. बल्कि अहं, अंतर्मनका संघर्ष आदि कारणोंसे सहाय दुविधामें फँसे हुये हैं.

---

१ - मुक्तिबोध - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९५८ पृ. ७०

२. कुंवर साहब :-

सहायबाबूजीका दामाद और अंजलिका पति कुंवर साहब आशावादी और आत्मविश्वासी नवयुवक है. वह हर तरहके भ्रष्ट कार्य करनेके लिए हमेशा तैयार रहता है. वह एक ऐसे वर्गका प्रतिनिधीत्व कर रहा है, जो अपना काम पुरा करनेके लिए कौनसे भी कार्य करनेमें - कभी हिचकिचाते नहीं. स्वार्थ-सिध्दिके लिए कुंवरने अपनी पत्नी अंजलिको कठपुतलीके समान नचाया है. कुंवर पत्नीपर अधिकार जमाता है. जैनेंद्रजीके अन्य उपन्यासोंमें इस तरहका पात्र विरलाही मिलता है. स्वार्थके लिए बूरेसे-बूरा काम करनेके लिए वह तैयार है. सरकारी सहायताके लिए वह सहायबाबूकी मदद चाहता है. वह सहायसे कहता है कि " ..... आपके आशीर्वादसे बाकी भी सब ठीक हो जायेगा. वह स्टेटके इण्डस्ट्री मिनिस्टर - जरा उन्हें कहनेका सवाल होगा.आप कब उधर पधार सकते हैं."[१]

कुंवर भ्रष्ट तरीकोंसे संपत्तीका कर्जन करना चाहता है - मिनिस्टरों और अधिकारियोंव्दारा गलत कार्य करनेके लिए वह तैयार रहता है. ठाकुर महादेवसिंहका सहायबाबूके घर आना उसे अच्छा नहीं लगता. " मैं देखता हूँ, इस घरमें ठाकुरका काफी असर है. मालूम हुआ मुझे कि वो पीछे घरमें ठहँराये गये थे. वीरेश्वर वहां है तो बाबूजी, भाभीजी यह उनका ऐहसान नहीं है."[२] अपनी राहमें बुढे लोगोंने आना कुंवरको पसंद नहीं है. बिजनेस लगानेकी बात केवल सहायबाबूको प्रभावित

---

१. मुक्तिबोध - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७८ पृ. ९१

२. मुक्तिबोध - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७८ पृ. ९३

करनेके लिए ही कुंवर करता है. गिरफ्तारीका वारंट उसके नामसे निकला है. अत: अन्य पारिवारिक सदस्योंके अनुसार वह सहायबाबूसे पदका स्वीकार करनेके लिए ह कहता है. वीरेश्वरको अपनी फर्ममें लगानेकी बात सोचते हुये रूसी स्त्री तमाराके समाजवादी विचारोंका वह समर्थन करता है. वह उच्छृंखल वृत्तीका पात्र है.

३. दर बाबू :

" मुक्तिबोध " उपन्यासकी नायिका नीलिमाका पति दरबाबू है. लेकिन इसका चरित्र उपन्यासमें धूमिलसा बन गया है. उसका समूचा चरित्र और व्यक्तित्व सुस्पष्ट नहीं हो पाता. दरबाबू बिजनेसमें है और अपने कार्यके लिए पत्नीसहित दिल्ली आया है. नीलिमा सहायबाबूकी प्रेयसी रही है ; यह जानकर भी वह नीलिमासे शादी करता है. पत्नी नीलिमाको स्वतंत्रता प्रदान करता है. जब सहायबाबू और नीलिमा होटलमें साथ-साथ बैठकर भोजन लेते हैं, तभी अपने साथीके साथ अन्य टेबुलपर वह खाना खाता है. कथानकके विकासमें इस पात्रका कुछ महत्व नहीं है. लेकिन पत्नी नीलिमाका चरित्र दरबाबूके कारण उजागर बन गया है. दरबाबूमें कायरता और भीरूता काम कर रही है. कामके लिए बाहर जाते समय वह सहायकी क्षमा माँगता है. दरबाबूकी पत्नी नीलिमा दरबाबूके साथ रहकर भी सहायबाबूके लिए जी रही है. उसने पत्नीके लिए खुली छूट प्रदान की है. दरबाबू उदारमतवादी, आधुनिक और बौध्दिकतासे परिपूर्ण और विचारी पात्र है.

" अनंतर " उपन्यासके पति पात्र :

१. प्रसाद -

" अनंतर उपन्यासकी कथा कहनेवाले पात्र प्रसाद हैं. बेटे और

बहू को मधुपर्वके उपलक्षमें कश्मीर भेजकर लौटते समय वे जीवनमें व्यर्थताका अनुभव करते हैं. और उनका चिंतनपक्ष प्रबल हो जाता है. प्लेटफार्मसे वापस आते वक्त अपने साथ पत्नी रामेश्वरी, पुत्री चारु और जामात आदित्य भी साथ हैं ; इसका ख्याल उन्हें नहीं रहता. अपनी अप्रसन्नता का समाधान उनके पास नहीं है. बासठ वर्ष पार हो चुके है ; फिर भी जिंदगीका सही अर्थ उनके ध्यानमें नहीं आया है. वे बेचैनी और उदासीका अनुभव कर रहे हैं. " प्रसादको सामाजिक प्रतिष्ठाके साथ साथ पारिवारिक सुख भी मिला है. पुत्र और पुत्रीके विवाह हो चुके हैं. इतना सब होनेपर भी वह अपने आपको भीतरसे टूटता हुआ अनुभव करता है. अंतर्मनकी रिक्तताका कारण उसकी समझमें नहीं आता है. इसी सिलसिलेमें वह जीवनके विगत बासठ वर्षोंका लेखा जोखा करने बैठ जाता है."[१] प्रसाद बाबूने अपने व्यक्तित्वको स्वयं बनाया है. समाजमें उन्हें मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त हुयी है. पैसोंकी कमीका अनुभव वे नहीं करते. मधुपर्व मनानके लिए चार हजार रुपये अलगसे वे बहूके हाथों रख सकते हैं. लेकिन पैसोंके बारेमें उनकी पत्नी रामेश्वरी सतर्कता जताती है. रामेश्वरीने प्रसादसे न कोई आकांक्षा रखी है और न प्रसादनेभी उसकी इच्छाओं को अधिक महत्व दिया है.

उदासीके अनुभवके कारण प्रसादका मन घर-गृहस्थीसे ऊबता जा रहा है. अतः सामाजिक सेवा, धार्मिकता और लेखनमें वे अपनेको व्यस्त रखनेका प्रयास करते हैं. वे विख्यात लेखक हैं. गुरु आनंद माधवके प्रति उनके लिए माउण्ट आबू जाते हैं. प्रसाद किरायेके मकानमें रहते हैं. पत्नी रामेश्वरीको किरायेके मकानमें रहना अच्छा नहीं लगता. पत्नीका मुग्धकिशोरी रूप अधिक प्रिय रहा हैं. उसके रूपकी याद उन्हें बार-बार आती है. " ....बयालिस बरस हुये, एक मुग्धा किशोरी परिणीताके

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डा. बलराजसिंह राणा प्रथम संस्करण १९७८ पृ. १३७

रूपमें मुझामें आ मिली थी. उस संग-सहारे सचमुच क्या वे कोंपलसे नये दिन स्वर्गोपम नहीं बन आये थे. पर स्वर्ग वह शनैः शनैः फिर मटमैली धरतीपर बनता चला गया."[1] युवावस्थामें अनेक रोमांचक प्रसंगोंके अनुभव प्रसादने लिये हैं. पारिवारिक अवस्था दोलायमान बन, जानेपर पत्नी रामेश्वरीने सफल प्रयत्नोंसे उन्हें सही मार्गपर लाया है. जीवनके अनुभवोंसेही धर्म, नीति और समाजके बारेमें प्रसादके विचार सशक्त एवं प्रौढ बने हैं.

गुरु आनंद माधवके आग्रहपर अपराके साथ प्रसाद आबू जाते हैं. प्रसादकी सफर सुखपूर्ण हो, इसलिए जामात आदित्यने उनकी व्यवस्था अपराके साथ ए.सी.कूपेमें की हैं. अपरा इस यात्रीमें प्रसादकी मानो दूसरी पत्नी ही बनी है. यह प्रसादको प्रिय नहीं है. अपराका कूपेमें होनेवाला रूप और वनानिके घरमें होनेवाला स्वरूप देखकर प्रसाद दंग रह जाते हैं. अपराके प्रति उनके मनमें सहानुभूति है. अतः अपरा आदित्य के साथ रहनेपर भी अपनी पुत्री चारु और पत्नी रामेश्वरीको समझानेके यत्न वे करते हैं. मानवीय, एकताके लिए गांधीवादी विचारधाराको प्रसाद अधिक महत्व देते हैं.

पुत्री चारुके प्रति प्रसाद अधिक सतर्कता जताते हैं. पतिके साथ रहते वक्त किसतरह रहना चाहिए, इसकी जानकारी वे पुत्रीको देते हैं. पत्नी रामेश्वरी नाराज होनेपर वे उदास बन जाते हैं. कमरेमें टहलते-टहलते सोचते हैं. - " जरूर गहरी त्रुटि होनी चाहिए कि इतने वर्ष साथ बितानेपर भी पत्नीके भरोसा नहीं हो पाया है. मालूम होता है कि पति-पत्नी संबंध इतने अधिक निकट हो जाता है कि परस्परके लिए संभ्रमतक नहीं बचता."[2] रामेश्वरी अपराको जब चारुके पास नहीं आने देती तब प्रसादको केवल दर्शकका काम करना पडता है. लेकिन अपराके प्रति

---

१. अनंतर - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७९ पृ. १०

२. अनंतर - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७९ पृ. १०१

प्रसादकी सहानुभूति परखकर रामेश्वरी अपने विचारोंमें परिवर्तन करती हैं. अपरा, चारु, रामेश्वरी आदि स्त्रियोंको लेकर प्रसादके मनमें सुंदर अंतर्विवादकी निर्मिती हुयी है. गुरु आनंद माधवके विचारोंका असर प्रसादके मनपर होनेसे उनके वचनोंको महत्त्व देनेके लिए वे कभी-कभार बहसमें चुपभी हो जाते हैं.

पुत्री चारुके समान पुत्र प्रकाशके प्रति भी प्रसाद व्यवहारी निगाहसे देखते हैं. वनानि प्रसादकी और सम्मानकी दृष्टिसे देखती है. उसका शांतिधाम साकार करनेके लिए प्रसाद प्रयत्नशील हैं. अपरा और वनानिका शीत झगडा सुलझानेमें वे सफल होते हैं. आदित्यकी इंडस्ट्री, गुरुकी लोकसेवा, अपराकी उच्छृंखलता, चारुकी गृहस्थी, रामेश्वरीकी समस्या आदिसे संपर्क स्थापित होनेपर भी प्रसाद इस दुनियामें अलग कोटिके आदमी हैं.

२. आदित्य :

भौतिक सुखोंको अधिक महत्त्व देनेवाला प्रसादजीका जामात आदित्य युवा गृहस्थ हैं. एक सफल उद्योगपतिके रूपमें उसे पहचाना जाता है. वह होशियार और कामिंदा आदमी है. व्यवसायिक होनेके कारण उसकी जिंदगी घुमक्कडकी रही है. व्यवसायके लिए बंबई, अहमदाबाद, कलकत्ता, देहलीतक उसकी भटकन रहती है. आधुनिक वेश और रहन-सहनके कारण वह अपना रौब सभी लोगोंपर जमाता है. पत्नी चारु, पैसा अधिक खर्च करती रहे, ऐसी उसकी राय है. " आदित्यके जीवनकी गति तेज है. प्रश्नकी कहीं दुविधा नहीं है. इस दुनियामें उसे पाना है और भोगना हैं. अतिरिक्त सोच विचार उसके पास किसी ओरसे नहीं आ पाता. प्रयत्न उसका इसलिए तीरके मानिंद सीधा और एकाग्र होता है. त्वरित निर्णय और व्यावहारिक संकल्पका वह युवक है..."[१]

---

१. अनंतर - जैनेंद्र कुमार संस्करण १९७९ पृ. ६

आदित्यकी पत्नी चारु कुशल गृहिणी है. वर्धन और नीला पुत्र-पुत्रीके प्रति उसके मनमें स्नेह है. देहलीमें गर्मी अधिक रहनेसे वह पत्नी, पुत्र एवं पुत्रीको नैनीताल भेजता है. ससुर प्रसादकी सभी सुविधाओंकी ओर आदित्य ध्यान देता है. सास रामेश्वरीपर भी वह रौब जमाता है.

गुरु आनंद माधवसे मिलते वक्त आदित्यका परिचय अपरासे होता है. अपराके व्यक्तित्वसे मोहित होनेके कारण वह उसके प्रति आकृष्ठ होता है. इस बातको लेकर सास रामेश्वरी और पत्नी चारु चिंतित होती हैं. अपरा आदित्यसे प्यार करने लगती है. आदित्यको भी अपरा प्रिय लगती है जब चारु अपराका प्यार समझाती है, तभी वह अपराको स्नेहभरी निगाहोंसे देखकर अपने xxxx घरमें उसे स्थान देती है. सफल और बडे बननेवाले व्यक्तियोंके गुण आदित्यके पास हैं. वह महत्वाकांक्षी आदमी हैं. " निश्चिंत प्रकृतिका आदित्य उलझनसे दूर रहता है. लक्ष्यपूर्तिमें वह अपनी पूर्ण शक्ति लगा देता है. औद्योगिक क्षेत्रमें उसकी सफलता का आधार उसकी कर्मठता और सांसारिक सूझाबूझ है. व्यावहारिक आदित्यका गृहस्थ जीवन सुखी है. गृहस्थ-सुखका मूल आधार धन भी हैं. "[१] अंतर्जगतकी अपेक्षा आदित्यमें बहिर्जगत अधिक प्रभावी रहा है. वनानिके शांतिधामके लिए वह तुरंतही पच्चीस हजार रुपया जमा कर देता है.

पत्नी चारुके साथ आदित्यका संबंध अपरासे भी आया है. अपरा उससे प्यार करती है. आदित्य आबूमें उसे लेकर झीलकी सैर करता है. आदित्य मुक्त और निर्द्वंद्व प्रवृत्तिका पात्र हैं. पत्नीके प्रति उसके मनमें स्नेह है. चारुको आधुनिक बनानेके लिए व डान्स सीखाना चाहता है. वह घुडसवारी कर ही है यह सुनकर आदित्य आनंदित होता है.

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन -
- डा. बलराजसिंह राणा-प्रथम संस्करण १९७८ पृ. १७९-१८०

आदित्य मर्द पुरुष है. उसकी तत्परतापर प्रसाद बेहद खुश हैं. वनानिके मधु-मखखीपालन और कुटीरोद्योगके लिए वह अलग-अलग रूपमें हजार हजार रुपया देता है. पैसोंको खर्च करते वक्त वह अपना गृहस्थी रूप भूल नहीं सकता. इसके संबंधमें वह प्रसादजीसे कहता है कि " मैं, आसानीसे, बाबूजी, हाथसे रुपया निकालनेवाला थोडे ही हूँ. गुरुजीने चौथाई कहा था. बिना किये धरे लीजिए यहां तो आधा पूरा हो गया ! फिर अब वनानिजीको प्रयत्न करना चाहिए. जरा जाए, डोलें, भुगते. मैं समझता हूँ इस आसानीसे आधा पचासहजारका हो जाना भी उनके हकमें ठीक नहीं है. वह कहीं इसमें अपने अध्यात्मकी महिमा न समझ बैठें- माफ कीजिएगा, वन्या जी, मैं जरा-संसारी आदमी हूँ."[१] अध्यात्मिकताकी अपेक्षा आदित्य भौतिकतापर अधिक विश्वास रखता है. फिर भी-वनानिजीके शांतिधामकी सहायता करनेके लिए वह तैयार है. अपराके कहनेपर वह पच्चीस हजार रुपये अलग-अलग चेकोंद्वारा स्वयं जमा करके भेज देता है. इंजिनियरद्वारा शांतिधामकी योजना और प्लान वह बनाना चाहता है.

व्यवसायमें रहनेके कारण आदित्यका कानूनका ज्ञान प्रशंसनीय है. आधुनिकतामें रहनेवाले इस पात्रमें न द्वंद्व है न उलझन. समस्याओंका समाधान वह तुरंतही कर देता है. पारिवारिक जीवनमें पत्नी चारुको वह हमेशा खुश रखता है ; लेकिन उसके बंधनोंका स्वीकार वह नहीं करता. अपराके साथ स्वच्छंदतासे व्यवहार करता है. बल्कि इससे पति-पत्नी संबंधमें बाधा उपस्थित होनेपर उसका उचित समाधान भी वह करता है. तूफान आता है और चला जाता है. फिर सन्नाटा स्तब्धता, और शांति मौजूद रहती है. अपराके आनेसे आदित्यकी चारु नाराज, रूष्ट थी. लेकिन अपराका सही स्वरूप ध्यानमे आनेपर आदित्य और चारुमें फिर स्नेहकी मात्रा अधिक तीव्र हो जाती है.

---

१. अनंतर - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७९ पृ. ८७

३. प्रकाश :

" अनंतर" उपन्यासके गौण पात्रोंमें प्रकाशका समावेश होता है. वह प्रसादका पुत्र और रंजनाका पति है. युवक होनेके कारण उसके मनमें अनेक उम्मीदें हैं. जैसेही उसका विवाह हुआ है, वह अपने पिताजीके प्रति विद्रोही बना है. पिताजीने उसे जीवन-यापन करनेके लिए प्रकाशन संस्था खोलकर दी है, लेकिन इस कार्यसे वह संतुष्ट नहीं है. अहंकार जागृत न होनेसे अपनी गतिविधियोंपर वह प्रसादकी रोक-टोक सहना नहीं चाहता. वह प्रसादसे कहता है - " मैंने इन्टर साइंससे किया. आपने चाहा और अब एम्.कॉम.हूँ. पर मैं बढते विज्ञानको समझना चाहता हूँ. फिर इन्सान और समाजके विज्ञानोंको भी."[१] प्रकाशकी पत्नी रंजना एम्.ए. पास है. विवाहोपरांत मधुपर्व मनानेके लिए प्रसाद उन्हें कश्मीर भेजते हैं. पति-पत्नीने कश्मीरकी सैर की, लेकिन इस यात्राका प्रभाव उनके स्वास्थ्यपर अच्छा नहीं रहा है.

प्रकाश महत्त्वाकांक्षी युवक है. खूब पैसा बनाकर ऐश्वर्यशाली बननेकी उसकी इच्छा है. प्रकाशके "अहं " की जागृतिपर प्रसाद निराश बन जाते हैं. क्योंकि प्रकाश पहले ऐसा नहीं था उसके संबंधमें लिखते हुये वे बताते हैं - " प्रकाश आरंभसे विनयशील रहा है. कम बोलता है और सबके काम आता है. अपने संबंधमें वह विश्वसनीय माना जाता है. मित्र उसपर भरोसा रखते हैं. मां उसे कुछ भी कह ले, कभी पलटकर उत्तर नहीं देता. इसलिए, जब पढना हो गया, तो प्रश्न हुआ कि वह क्या करे. अंतमें घरकी किताबें छापनेका काम लेकर बैठ गया. स्थिर वृत्तिका वह युवक है और २८ वर्षकी अवस्थासे पहले आग्रह न रहनेपर भी उसने विवाह स्वीकार नहीं किया."[२]

---

१. अनंतर - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७९ पृ. १५९

२. अनंतर - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९७९ पृ. १२१

प्रसाद और प्रकाशमें संघर्ष निर्माण होनेपर प्रकाश मकान छोडना चाहता है. वयोवृध्द पिताजीका आधार बननेके लिए वह तैयार नहीं है. रंजना और प्रकाशका विवाह हालही में हुआहै. उन दोनोंके संबंधोंका और गृहस्थीका चित्रण उपन्यासमें नहीं मिलता. बल्कि विवाहके बाद अपने और अपनी पत्नीके बारेमें सोचनेके लिए वह मजबूर हुआ है. इसलिए वह प्रसादके बारेमें निर्मित शिकायतें अपने मित्रके पिताजीके पास भेज देता है. प्रकाश और प्रसादमें समेट प्रस्थापित करनेका कार्य गुरु आनंद माधव करते हैं. इस स्थलपर वह गुरु आनंद माधवको भी खरी-खोटी सुनाता है, जिससे प्रसादकी नाराजगी बढ्ती है. अंतमें वह प्रसादव्दारा निर्मित प्रकाश संस्थामें काम करने लगता है. " उपन्यासकार इस पात्रके व्दारा दिखाना चाहता है कि समाजमें सिध्दांतवादी और प्रतिष्ठित व्यक्तियोंके बच्चे अधिकतर विद्रोही हो जाते हैं. बच्चेके स्वाभाविक विकासपर सिध्दांतोंका अंकुश प्रतिक्रिया उपज देता है."[१] स्वंतत्रतामें जीनेकी स्पृहा प्रकाशमें निर्माण होती है, इसलिए वह प्रकाशन संस्थामें मॅनेजरकी नियुक्ति करता है और वह पत्नी रंजनाके साथ सुख तथा चैनमें जीनेकी लालसा मनमें रखता है.

## " अनामस्वामी " उपन्यासके पति पात्र :

### १. शंकर उपाध्याय -

भौतिक जगतमें रहनेवाला और " उत्थान " का आधारस्तंभ शंकर उपाध्याय है. जैनेंद्रजीके अन्य पात्रोंके समान यह कुंठाग्रस्त पात्र है. काम-अभुक्ति इसमें प्रधान रूपसे मिलती है. अपने कालिज जीवनमें यह रानी वसुंधराके प्रति आसक्त था. लेकिन किसी कारणवश इसका विवाह वसुंधरासे नहीं हो पाया. वसुंधराका विवाह कुमारसे होता है. कुमार उपाध्यायका मित्र है. कुमार बीमार रहनेसे उसकी सहायता करनेका काम उपाध्यायको करना पड रहा है. परिणामत: रानी वसुंधराके निकट

१. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन
डा. बलराजसिंह राणा प्रथम संस्करण १९७८ पृ. १८१

वह हमेशा रहता है.

शंकर उपाध्याय विधुर पात्र है. उसकी पत्नीका देहांत हुआ है. वह दुबारा विवाह नहीं करना चाहता. विवाहसे स्वातंत्र्यमें बाधा निर्माण होती है, ऐसी उसकी राय है. पत्नीकी मृत्युके पश्चात् अविवाहित रहकर युवकोंमें उत्थानका कार्य उपाध्याय कर रहा है. आध्यात्मिकताके बदले वह भौतिकतापर विश्वास रखता है. वसुंधराका विवाह कुमारसे होनेपर भी उसका मन वसुंधराको छोड नहीं पाता. यद्यपि कुमारने वसुंधराको खुली छूट प्रदान की है. फिर भी काम कुंठित उपाध्याय वसुंधरासे प्राप्त पीडासे छुटकारा पानेके लिए अन्यत्र विवाह करता है, लेकिन भावावेशमें लिये गये इस निर्णयपर बादमें वह अशांति अनुभव करता है. पत्नी गर्भवती बन जानेपर उसकी वह हत्या करता है. वसुंधरा उसे चाहिए, लेकिन वह भोग्या रूपमें.

शंकर उपाध्याय कालिज जीवनमें होशियार रहा है. प्रतिभा और योग्यताके बलपर वह अपने विषयका विभागाध्यक्ष बनता है. उसकी असामान्यताको प्रकट करते हुये अनामस्वामी कहते हैं कि - " शंकर उपाध्याय भगवानके भेजे अनन्य प्रेम और अपनेमेंसे सिर उठाये अहम्-प्रेमके व्दंव्दमें जूँझा और झुलस रहा मालूम होता है. यह विकट घर्षण सबको नहीं झेलना पडता. .... शंकर निस्संतति है. अंत तक निस्संतान ही शायद रह जायेगा. संततिके हिसाबमें किताबें उसकी रह जायेंगी, पर उनके सहारे अंदरका महाभारत नहीं टलता है. वह महाभारतका पात्र है."[१] अनामस्वामीके इन विचारोंके अनुसार उपाध्यायकी मृत्यु निस्संतान रूपमें ही होती है. बल्कि किताबों और विचारोंव्दारा उसकी ख्याति विश्वतक पहूँचती है.

सामाजिक और धार्मिक मान्यताओंके प्रति शंकर उपाध्यायके मनमें आक्रोश है. वसुंधरा मानसिक शांति प्राप्त करनेके लिए अनामस्वामीके आश्रममें जानेपर उसे वह विरोध करता है. वह उपाध्यायके कटु वचन

१. अनामस्वामी - जैनेंद्रकुमार व्दितीय संस्करण १९८० - पृ. १६२

सहन करती है. कुमारपर उपाध्यका अधिक प्रभाव है. "विश्व-विद्यालयमें युवावर्गके लिए वह तरूणोत्थान नामक संस्थाकी स्थापना करता है. इस संस्थाके माध्यमसे वह अपने क्रांतिकारी विचारोंका प्रचार करता है. वह युवक-युवतियोंका ऐसा वर्ग तैयार करता है, जो धार्मिक रूढियों, सामाजिक मान्यताओं और अध्यात्मवादकी जडे उखाडनेके पक्षमें है."[१] उपाध्यायके भाषणासे प्रभावित होकर एक दल अनामस्वामीका आश्रम उखाडनेके लिए भी तैयार हुआ था. साहसपूर्वक रचनात्मक प्रवृत्तियोंको निर्माण करनेवाले युवकोंको असामाजिक तत्वोंसे संरक्षण करनेके लिए वह समाचारपत्रकी सहायता लेता है.

शंकर उपाध्यायने रूढीके बंधनोंसे मुक्त होनेके लिए इलाहबाद में एक क्लब शुरू किया है. दोन व्यक्तियोंके बीच ईश्वर तथा राज्यकी सीमाओंको न लानेका प्रयास इस क्लबद्वारा किया जाता है. उपाध्याय इस क्लबका प्राण रहा है. इसमें रहते हुये भी उसने कभी उच्छृंखलताका व्यवहार नहीं किया है. न उसने वस्त्र उतारें हैं. और न मांस तथा मद्यको छुआ है. गहन और मूर्धन्य बौध्दिकताके कारण अपने आसपास तरूणोंकी संख्या बढाकर और उनकी प्रबल संस्था बनाकर उपाध्याय प्रख्यात बना है. उसका रूप अनामसाही अंतरराष्ट्रीय हुआ है. तात्विकता और जीवंतताका योग उसके विचारोंमें है. अनाम-स्वामीके आश्रममें उसका भाषण विद्वत्तापूर्ण स्फूर्ति और साहससे युक्त होता है. आश्रमवासियोंको उसका परिचय कराते हुये अनामस्वामी कहते हैं - " हमारी भारतीय प्रतिभाकेउपाध्याय उज्ज्वल प्रतीक हैं. देशको उनपर अभिमान है और विश्वासके साथ राष्ट्र अपने इस उपहारको

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्रके पात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन -
- डा. बलराजसिंह राणा - प्रथम संस्करण १९७८ पृ. ११९

जगत के समक्ष कर सकता है. उनसे सिध्द है कि आधुनिक विचारकी दिशामें भारत किसीसे पीछे नहीं है. "[१] व्यावहारिक दृष्टिसे उपाध्याय अनामस्वामीसे ईर्ष्या रखता है. लेकिन अनामस्वामी उपाध्याको नीचा नहीं देखते, बल्कि उसका सत्कार ही करते हैं. ज्ञानवान और प्राणवान आदमीके लक्षण हमें उपाध्यायमें मिलते हैं.

राजकुमार उपाध्यायके मित्र उन्होंने उपाध्यायको ट्रस्टका अध्यक्ष बनाया है. यद्यपि कुमारके बारेमें उपाध्यायके मनमें श्रध्दा है फिर भी ईर्ष्याकी भावना निर्माण हुयी है. वसुंधरा आज भी उपाध्यायसे प्रेम करती है. उपाध्यायने अपनी पत्नीको मारा है. अपने प्रेमीके हाथों मृत्युको पा जानेकी वसुंधराकी आकांक्षा पूर्ण होती है. उपन्यासके अंतिम दृश्यमें अनामके आश्रमसे वह उपाध्यायके आश्रमसे वह उपाध्यायके निवासपर चली जाती हैं. जहांपर उपाध्याय जहरकी सुईसे उसे मौत प्रदान करता है. शंकर उपाध्याय फाँसी चाहता है ; लेकिन वसुंधराको मृत्यु प्रदान करनेपर भी वह जिंदा रहा उसकी ख्याति बढती गयी और अंतमें जहर से अपने आपको मार लिया. कहा जाता है कि अंतमें वह अपनेसे बहुत तंग रहा, जिसे सहन न करनेके कारण ही उसने मौतका स्वीकार किया.

२. राजकुमार -

अमीर घरानेके राजकुमार वसुंधराके पति हैं. कॉलिजमें वे उपाध्यायके साथ पढते थे. पढाईमें उपाध्यायने इनका साथ दिया है. यद्यपि वसुंधराका विवाह उपाध्यायके साथ हो रहा था ; लेकिन धन आदिमें स्तरका अंतर आ जानेके उपरांत उसका विवाह कुमारसे हुआ है. इस बातकी समूची जानकारी कुमार साहबको है. वे शंकर

---

१. अनामस्वामी - जैनेंद्रकुमार व्दितीय संस्करण १९८० पृ. १४२

उपाध्याकडे भक्त रहे हैं. अतः उपाध्याय राजकुमारके राजपरिवारके परामर्शक बन गये हैं. विवाहके बाद राजकुमारके बीमारीने आकर घेरा है. बरसों चली यह बीमारी अंतमें अर्धांगमें परिवर्तित हुयी . वे अपनी जगहसे हिल नहीं सकते. तब फिरना दूरकी बात है. वे पारमार्थिक स्वभावके व्यक्ति हैं. पी.दयाल कुमारकी हालतका वर्णन करते हैं. " (कुमार) विलक्षण व्यक्ति मालूम हुये. अपने संबंधमें कोई उन्हें शिकायत नहीं है. जागीर चली गई है. पेंशन बंद हो गयी है, तो इससे क्या ? क्या अब भी करोडोंसे बेहतर हालतमें नहीं है? बताते थे कि बीमारीने उन्हें बदल दिया है. पहले तृष्णा थी, हर चीजकी चाह थी और , अधिकार प्रिय लगता था. अब आस्तिक हैं, अपने बारेमें नहीं सोचते., सबका और दूसरोंका अपने ऊपर उपकार मानना उन्हें अच्छा लगता है. विशेषकर वसुंधराके वह अपनेको बहुत उपकृत गिनते हैं. "[1] वे मानते हैं कि अपनेही कारण वसुंधराकी जिंदगी बरबाद हुयी है. खानदानके लिए वे वसुंधरासे सगा पुत्र चाहते हैं. इसलिए उपाध्यायके ओर वसुंधराको वे धकेल रहे हैं. वे उसे पल्लवित और पुष्पित बनाना चाहते हैं. उन्हें न खानदानको समाप्त करना है न रानीको निष्फल. वसुंधराका जीवन सुखा रहा है, इसकी व्यथा कुमारके मनमें है. बेहद अनुरोधसे वे पत्नीकी जिंदगीको हरा-भरा करना चाहते है, लेकिन उपाध्याय यह दान वसुंधराको देनेके लिए तैयार नहीं है. वह वसुंधरासे कहता है - " तुम सामान्य स्त्रीकी तरह माता बननेकी न सोचो. अप्सराएँ माता नहीं होती....भोग्या ? नहीं, ठीक भोग्या भी नहीं होती. वे तो सौंदर्यको प्रकाश देती हैं. चाँदनी देती हैं. मैं तुममें वही देखना चाहता हूँ."[2] कुमार अपनेको उपाध्याय और वसुंधराके पूर्व प्रेमके बीच बाधा मानता है. इस बातको लेकर वे अपराध भावनासे पीडित हैं.

---

१. अनामस्वामी - जैनेंद्रकुमार व्दितीय संस्करण १९८० पृ. १८२

२. अनामस्वामी - जैनेंद्रकुमार व्दितीय संस्करण १९८० पृ. १५५

कुमार पत्नीको उन्मुक्त जीवन जीनेकी प्रेरणा देते हैं. वे प्रत्नीत्र पत्नीसे डरते भी हैं, लेकिन वसुंधरा उनसे सादर शिष्टाचार रखती है. लंबी बीमारीके कारण कुमारकी आवस्था अबोध और चंचल बालकके समान बन गयी है. उनकी सूरत हमेशा शांत,श्रांत,नीरव, निरीह और निर्विकल्प रहती है. पैसोंका प्रश्न निर्माण होनेपर घरके जेवर भी बेचनेके लिए वे तैयार हैं. दयालने जेवरोंका डिब्बा वापर देनेपर उनके राजसी संस्कार जागृत होते हैं. और डिबा जोरसे दीवारपर फेंकते हैं. अनामस्वामीका खत इलाहाबाद पहुँचनेके उपरांत पहली बार कुमार नाराज हो जाते हैं. पत्नी वसुंधराको घरसे निकाल देते हैं. उनकी इस अवस्थाका चित्र प्रस्तुत करते हुये वसुंधरा कहती है - " कुमार साहबका ऐसा रूद्र रूप मैंने कभी नहीं देखा था. शायद पहली बार कुमार अपने आपेमें आये - लगता है खानदानी इज्जत का सवाल उठ गया उनके मनमें. एक वह चीज है, वह चिन्गारी,जो जीवनके उनके अब भी जगी है.और जगे तो वह उपाध्यायपर भी प्रबल हो सकते हैं. उनके सोये प्रतापको मैं जान ती हूँ."[१]

जीवन तृप्तिका अनुभव कुमारने नहीं लिया है. शारिरिक असमर्थताके कारण उनके मनमें चिडचिडाहटका निर्माण नहीं हुआ है. बल्कि वे अधिक उदार, संवदेनशील और कृपालु बन गये हैं. आत्मिक शांतिके लिए वसुंधरा अनामस्वामीके पास आती है, लेकिन आनमस्वामी पतिकी सेवा करनेके लिए उसे वापस भेजते हैं. रोगीका बिस्तर,दवाएँ आदिका उचित प्रबंध वसुंधरा रखती है. उसमें पतिके प्रति निष्ठाके भाव पाये जाते हैं. क्रोधवश जब कुमार पत्नीको घरसे शंकर उपाध्यायद्दारा वसुंधराकी हत्या हो जाती है.

---

१. अनामस्वामी - जैनेंद्रकुमार व्दितीय संस्करण १९८० पृ. २०६

३. उदिताके पति :

पी. दयालकी नातिन उदिता अमरिका जाती है और वहां शंकर उपाध्यायके भतीजे तेजूसे प्रेम करती है. तेजू और उसके मित्रके साथ वह रहती है. इनमें नर-नारी संबंध स्थापित हो जाता है. भारतीय मूल्य और पाश्चात्य मूल्योंके दर्शन हमें उदिताके पतियोंमें होते हैं. विदेशी युवकोंमें स्वतंत्रता, उन्मुक्तता और स्वैर जीवन जीनेकी लालसा रहती है. धीरे-धीरे यह प्रणाली भारतीय युवक युवतियों को भी प्रिय लग रही है. अतः प्रिसंटनमें रहते हुये प्रेम और वैफल्य इन दोनोंका अनुभव विवाह न होकर भी अपने माने हुये पतियोंके साथ उदिताने किया है. " एम.ए.होनेसे पूर्व ही उदिता कठिनाई में पडी. सावधान रहते भी गर्भ ठहरा . जिसे छूटना उसे जरूरी न लगा. युवक दोनों सफलताओंकी दिशामें व्यस्त थे और उसने पाया कि वह अकेली है. हिम्मत उसने नहीं हारी. बच्चा हुआ, एम्.ए. हुयी. बच्चा शिशुनिकेतनमें रखा गया, जहां प्रयत्नसे वह भी शिक्षिकाकी जगह पा गयी. प्रेम हुआ, छूटा. फिर हुआ, फिर छूटा तीसरे प्रेमपर दोनोंने विवाह स्वीकार किया."[१] जिस व्यक्तिके साथ उदिताका विवाह हुआ है ; उसका ~~xxxxxx~~ नाम नहीं मिलता. लेकिन अब उदिताके पति और उदितामें काफी प्रेम है और पर्याप्त सुख सुविधाएँ घरमें मौजूद है. विवाहके बाद उदिताने एक पुत्री और एक पुत्रको जन्म दिया है.

---

१. अनामस्वामी - जैनेंद्रकुमार द्वितीय संस्करण १९८० पृ. २१४